Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 15

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

15 शअबान 1441 हिजरी कमरी 9 शहादत 1399 हिजरी शमसी 9 अप्रैल 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

जब कोई आदमी एक सिलसिला में शामिल होता है और इस सिलसिला की महानता और इज़्ज़त का ख़्याल नहीं रखता और इस के ख़िलाफ़ करता है तो वह अल्लाह के निकट पकड़ा जाता है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

आचरण की करामत

अल्लाह तआला से सुधार चाहना और अपनी शक्ति ख़र्च करना यही ईमान का तरीक़ा है। हदीस शरीफ़ में आया है कि जो विश्वास से अपना हाथ दुआ के लिए उठाता है अल्लाह तआला उस की दुआ रद्द नहीं करता है। अत: ख़ुदा से माँगो और यक़ीन और सच्ची नीयत से माँगो। मेरी नसीहत फिर यही है कि अच्छे अख़लाक़ ज़ाहिर करना अपनी करामत ज़ाहिर करना है। अगर कोई कहे कि मैं करामाती बनना नहीं चाहता तो यह याद रखे कि शैतान उसे धोखा में डालता है। करामत से गर्व और अंहकार अभिप्राय नहीं है। करामत से लोगों को इस्लाम की सच्चाई और हक़ीक़त मालूम होती है और हिदायत होती है। मैं तुम्हें फिर कहता हूँ कि गर्व और अंहकार तो करामत अख़लाक़ी में दाख़िल ही नहीं। अत: ये शैतानी शंका है। देखो ये करोड़ों मुसलमान जो ज़मीन के विभिन्न भागों में नज़र आते हैं क्या ये तलवार के ज़ोर से, जबरदस्ती से हुए हैं? नहीं ! यह बिलकुल ग़लत है। यह इस्लाम की करामाती का प्रभाव है जो उनको खींच लाया है। करामातें विभिन्न प्रकार की होती हैं। उन में से एक उनके एक अख़लाक़ी करामत भी है जो हर क्षेत्र में सफल है। उन्होंने जो मुसलमान हुए ,सिर्फ सच्चों की करामत ही देखी और इस का प्रभाव पड़ा। उन्होंने इस्लाम को महानता की दृष्टि से देखा। न तलवार को देखा। बड़े बड़े अनुसंधान करने वाले अंग्रेज़ों को यह बात स्वीकार करनी पड़ी है कि इस्लाम की सच्चाई की रूह ही ऐसी मज़बूत है जो ग़ैर क़ौमों को इस्लाम में आने पर मजबूर कर देती है।

सिलसिला की महानता और इज़्ज़त का ध्यान रखें

जो आदमी अपने पड़ोसी को अपने आचरण में तबदीली दिखाता है कि पहले क्या था और अब क्या है। वह मानो एक करामत दिखाता है। इस का प्रभाव पड़ोसी पर बहुत उच्च स्तर का पड़ता है। हमारी जमाअत पर आरोप लगाते हैं कि हम नहीं जानते कि क्या तरक़्क़ी हो गई है और लांछन लगाते हैं कि क्रोध तथा ग़ुस्सा के ग़ज़ब में पीड़ित हैं। क्या ये उनके लिए लज्जा का विषय नहीं है कि इन्सान उम्दा समझ कर इस सिलसिला में आया था जैसा कि एक नेक बेटा अपने बाप की नेक-नामी प्रकट करता है ,क्योंकि बैअत करने वाला बेटे के आदेश में होता है। और इसी लिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र पत्नियों को उम्हातुल मोमेनीन कहा है। मानो कि हज़ूर अम्मुल-मोमिनीन के बाप हैं। जिस्मानी बाप ज़मीन पर लाने का कारण होता है और ज़ाहिरी जीवन का कारण मगर रुहानी बाप आसमान पर ले जाता है और इस असली केन्द्र की तरफ़ लौटता करता है। क्या आप पसंद करते हैं कि कोई बेटा अपने बाप को बदनाम करे? तवायफ़ के यहाँ जाए और जूआ खेलता फिरे। शराब पीए या और ऐसे बुरे कर्म का करने वाला हो जो बाप की बदनामी का कारण हों। मैं जानता हूँ कोई आदमी ऐसा नहीं हो सकता जो इस कर्म को पसंद करे लेकिन जब वह नाख़लफ़ बेटा ऐसा करता है तो फिर लोगों की ज़बान बन्द नहीं हो सकती। लोग उस के बाप से सम्बन्ध कर के कहेंगे कि यह अमुक आदमी का बेटा अमुक बुरे काम करता है। अत: वह हतभागा बेटा ख़ुद ही बाप की बदनामी का कारण होता है। इसी तरह पर जब कोई आदमी एक सिलसिला में शामिल होता है और इस सिलसिला की महानता और इज़्ज़त का ख़्याल नहीं रखता और इस के ख़िलाफ़ करता है तो वह अल्लाह के निकट पकड़ा जाता है क्योंकि वह सिर्फ अपने आप ही को हलाकत में नहीं डालता बल्कि दूसरों के लिए एक बुरा नमूना हो कर उनको नेकी और हिदायत की राह से वंचित रखता है। अत: जहां तक आप लोगों की ताक़त है ख़ुदा तआला से मदद माँगो और अपनी पूरी ताक़त और हिम्मत से अपनी कमज़ोरियों को दूर करने की कोशिश करो। जहां थक जाओ। वहां सिदक़ और यक़ीन से हाथ उठाओ। क्योंकि विनय और विनम्रता से उठाए हुए हाथ जो सच्चाई और विश्वास की तहरीक से उठते हैं वापस नहीं होते। हम अनुभव से कहते हैं कि हमारी हज़ारों दुआएं स्वीकार हुई हैं और हो रही हैं।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 128 प्रकाशन कादियान)

आवश्यक सूचना

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ आपके पत्र देख रहे हैं और आप के लिए दुआएं कर रहे हैं।

उन समस्त पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए सूचना है कि यह ऐलान किया जाता है जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में ख़त लिखते हैं कि

उनके समस्त पत्र पहले की तरह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की सेवा में पेश हो रहे हैं। परन्तु कोरोना वाइरस के कारण से आजकल जो अवस्था है उनमें पत्रों के उत्तर लिखने वालों की कमी की गई है इस लिए इन सब पत्रों का अलग अलग उत्तर भिजवाना संभव नहीं। हुज़ूर अनवर अय्य-दहुल्लाह अल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ आपके पत्र देख कर आप के लिए दुआएं कर रहे हैं। अल्लाह तआला फ़ज़ल और रहम फ़रमाए। इस महामारी और दूसरी कठिनाइयों से प्रत्येक को बचाए। सबको अपनी सुरक्षा में रखे और हमेशा उस के प्यार की नज़रें आप पर पड़ती रहें ।

(मुनीर अहमद जावेद , प्राइवेट सैक्रेटरी)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर जर्मनी, जुलाई 2018 ई (भाग-8)

अपनी पाँच नमाज़ों की हिफ़ाज़त करें, सूरत फ़ातिहा याद करें और फिर उस का अनुवाद याद करें, इय्याका नअबुदू व इय्याका नस्तईन दोहराते रहें।

ख़ुदा तआला की इबादत पर पूरा ध्यान दें,इसी तरह इहदेन-स्सिरातल मुस्तक़ीम पर-ज़ोर दें और इस्तिग़फ़ार करते रहें।

हुज़ूर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ की एक मुबाइयात को बुनियादी नसीहतें।

मुझ से निकाह पढ़वाने वाले जिस शौक़ से निवेदन करते हैं, इसी शौक़ से अपने निकाहों और शादियों को निभाया भी करें।

दुआ करें कि जो आपस में रिश्ते क़ायम करते हैं , वे क़ायम रहने वाले रिश्ते हों, बर्दाश्त का माद्दा पैदा हो और एक दूसरे का ख़्याल रखने वाले हूँ, अल्लाह तआला आपको उस तौफ़ीक़ दी।

इक़रार तथा स्वीकार से पहले हुज़ूर अनवर की लड़के और लड़कियों को सुनहरी नसीहतें।

यह ज़मीनी इन्सान नहीं ,फ़रिश्ता हैं।

मेरा ज़ाती ईमान यह है कि जमाअत अहमदिया आज की दुनिया के लिए एक अमन और उम्मीद है जो हमें कठिनाइयों और मुश्किलों से निकाल सके,बहैसीयत ईसाई पादरी मेरा दृढ़ ईमान है।

मुसलमान और ईसाई दोनों धर्मों में यही शिक्षा साझी है कि ख़ुदा एक रहमान और रहीम ख़ुदा है जो कि हमारे लिए आपसी सम्बन्धों और भाईचारा वाली ज़िन्दगी बसर करने की बहुत अहम बुनियाद है और जिसके साथ हमारी नजात जुड़ी है। मुझे आज ये बातें जलसा पर महसूस हुई हैं और इन्शा अल्लाह मैं इस जलसा पर ज़रूर दुबारा आऊँगा (क्रोशिया से शामिल होने वाले एक पादरी)

जलसा सालाना जर्मनी पर आने वाले अहमदी , ग़ैर अहमदी और ग़ैर मुस्लिम सम्मानीनय मेहमानों के बहुत ईमान वर्धक प्रतिक्रियाएं।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

लट्टूया के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद लट्टूया से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया

एक मेहमान फ़ख़रुद्दीन साहिब ने निवेदन किया :हम बहुत अधिक ख़ुश हैं। जिस क़दर सम्मान और इज़्ज़त तथा मुहब्बत के साथ हमारा स्वागत किया गया है यह मेरे वहम तथा गुमान में भी नहीं था। आप लोगों की मेहमान नवाज़ी लाजवाब थी। आप लोगों के अल्लाह तआला पर मज़बूत ईमान और अल्लाह तआला की राह में जो काम आप सरअंजाम दे रहे हैं इस को देखकर में बहुत ही ख़ुश हुआ हूँ। जलसा के प्रबन्ध मुझे बहुत ही पसंद आए। इमाम जमाअत अहमदिया के ख़िताब अक़्ल तथा फ़िरासत से भरे हुए थे। इसके इलावा यूरोप के मुसलमानों का आपस में एक दूसरे का इस क़दर इज़्ज़त तथा सम्मान करना एक अलग ही चीज़ थी। हम ने कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसा भी हो सकता है। इस के लिए हम जमाअत अहमदिया के बेहद उपकृत हैं। जो मस्जिदें जर्मनी में जमाअत ने बनाई की हैं वे बहुत ही ख़ूबसूरत हैं। सब मस्जिदें तो हम नहीं देख सके मगर यह यक़ीन रखते हैं कि वह इस (सुबहान) से भी अधिक ख़ूबसूरत होंगी। एक बार फिर हम शुक्रिया अदा करते हैं। अल्लाह तआला आप लोगों को इन सेवों का महान बदला प्रदान फ़रमाए जो आप लोग कर रहे हैं ये सेवों देखकर हमें भी बहुत ख़ुशी हुई है।

एक और दोस्त हुमायूँ साहिब ने कहा: मुझे सब कुछ बहुत पसंद आया है। जलसा के प्रबन्धकों ने मेहमानों के साथ बहुत ही अच्छा व्यवहार किया है। प्रोग्राम भी बहुत ही उच्च रंग में सरअंजाम पाए। ट्रांसपोर्ट के विभाग ने बहुत अच्छा काम किया है। इस सिलसिला में मेरी प्रतिक्रियाएं बहुत ही सकारात्मक हैं। ख़लीफ़तुल मसीह से मुलाक़ात हमारे लिए बहुत बड़े सम्मान की बात है।

एक मेहमान बेकताश (Bektash) साहिब ने वर्णन किया: मुझे यह जलसा बहुत ही पसंद आया है। ख़ासतौर पर मुझे वहां सेवा करने वाले कारकुनान का व्यवहार और सुलूक बहुत ही अच्छा लगा। हमने तक़रीरें भी सुनी हैं। मुझे सब तक़रीरें बहुत पसंद आई हैं। इस में 43000 हज़ार से अधिक लोग आए हुए थे। सब ने हमारे साथ बहुत ही प्यार तथा मुहब्बत का सुलूक किया है। ख़लीफ़तुल मसीह से मुलाक़ात भी बहुत अच्छी रही। हमें जलसा की दावत देने का बहुत शुक्रिया।

जलसा में शामिल होने वाले एक मेहमान जहांगीर साहिब ने वर्णन किया: मुझे एयरपोर्ट पर स्वागत और फिर वहां से मस्जिद "सुबहान मैं ले जाना बहुत अच्छा लगा। मस्जिद भी नई और बहुत ही ख़ूबसूरत बनाई गई है। मेहमानों का स्वागत और होटल में निवास इत्यादि सब कुछ ही बहुत उत्तम था। सच्ची बात यह है कि कोई भी कमी नहीं थी। यह प्रशंसा नहीं है बल्कि हक़ीक़त है जो मैं निवेदन कर रहा हूँ। तक़रीर बहुत ही अच्छी थीं। इस्लाम को बहुत ही ख़ूबसूरत अंदाज़ में पेश किया गया है। काम करने वालों जलसा का रवैय्या बहुत अच्छा था। उनके चेहरों पर मुस्कुराहट थी और वह बात को अच्छी तरह समझाते थे बल्कि कई बार साथ जा कर सम्बन्धित जगह पर छोड़ आते थे। डयूटी वाले सब लोगों मुस्कुरा कर मिलते थे। काम करने वालों की सेवों बहुत ही प्रशंसा योग्य हैं। मुझे कोई कमी नज़र नहीं आई। सब बातों को तो वर्णन नहीं किया जा सकता। जलसा में बेशुमार प्रमुख और लाभदायक बातें वर्णन की गई हैं। लोग बहुत से देशों से आए हुए थे उनसे भी मुलाक़ात का अवसर मिला और बातचीत हुई। आने वाले सब लोगों के प्रतिक्रियाएं बहुत ही अच्छी थीं। मैं बहुत ख़ुश हूँ। इस जलसा से मैंने बहुत सीखा।

एक मेहमान बरात (Barot) साहिब ने कहा मेरे प्रतिक्रियाएं बहुत ही सकारात्मक हैं। सबसे पहले अगर प्रबन्ध की बात की जाए तो वह बहुत ही उच्च थे। एयरपोर्ट से मस्जिद और वहां से होटल और फिर होटल से जलसा गाह तक लेकर आना जाना ग़ैरमामूली सेवा का मुज़ाहरा करता है। गाड़ी चलाने वाले काम करने वाले भी बहुत अच्छे लोग थे। स्वागत और कार्ड इत्यादि की तैय्यारी, रिहायश की जगह और स्कियोरटी का बहुत अच्छा प्रबन्ध था। खाने भी अच्छे तैय्यार किए गए थे। जलसा में चाय काफ़ी इत्यादि का भी प्रबन्ध था जो कि एक बड़ी अहम बात थी। छोटे बच्चों का बार-बार मेहमानों से पानी पूछना भी बहुत अच्छा लग रहा था। जलसा का विषय "इस्लाम" था। हमें इस जलसा में बहुत ही अच्छी मालूमात प्राप्त हुई हैं। जलसा की तक़रीरें बहुत अहम विषयों पर आधारित थीं और इक्कीसवीं सदी की मांगों के अनुसार तय्यार की गई थीं। जो नारे बुलंद किए जा रहे थे मेरेविचार में उनका अनुवाद भी बताना चाहिए था। जलसा में पढ़ी गई नज़्में मुझे बहुत अच्छी लगीं। हमें कुछ मस्जिदें और जामिया अहमदिया का विज़ट करवाया गया जो कि बहुत अच्छा था। रिहायश भी बहुत अच्छी थी।

लट्टूया के वफ़द की यह मुलाक़ात 12 बज कर चालीस मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के मेंबरों ने तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया। लट्टूया की मज्लिस आमला के मेंबरों ने एक अलग तस्वीर भी बनवाई।

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

जंग उहद के झण्डा उठाने वाले हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि ने झंडे की हिफ़ाज़त का हक़ ख़ूब अदा किया।

''मुसअब रज़ि मक्का से बाहर पहला इस्लामी मुबल्लिग़ था'

बैअत उक़बा औला के अवसर पर मदीना से आने वाले 12 आदमियों ने आप के हाथ पर इस बात का अहद किया कि वे सिवाए ख़ुदा के और किसी की उपासना नहीं करेंगे। वे चोरी नहीं करेंगे। वे ज़ना नहीं करेंगे। वे अपनी लड़कियों को क़त्ल नहीं करेंगे। वे एक दूसरे पर झूठे आरोप नहीं लगाएँगे।

न वे ख़ुदा के नबी की दूसरी नेक शिक्षाओं में नाफ़रमानी करेंगे

जंग उहद के अवसर पर इस्लामी लश्कर के झण्डा उठाने वाले की अवस्था में शहादत का सम्मान हासिल करने वाले

इख़लास तथा वफ़ा के पैकर आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बदरी हज़रत मुसअब बिन अमीर रज़ी अल्लाह अन्हो की मुबारक सीरत का वर्णन।

दुनिया में कोरोना वाइरस से फैलने वाली महामारी के बारे में सुरक्षात्मक कोशिशें और नसीहतें इसी तरह दुआओं की तहरीक।

बेदर्दी के साथ शहीद किए जाने वाले प्रिय तन्ज़ील अहमद बट (वाकिफ नौ) इब्न अक़ील अहमद बट आफ़ लाहौर

आदरणीय ब्रिगेडियर बशीर अहमद साहिब भूत पूर्व अमीर जमाअत अहमदिया रावलपिंडी और आदरणीय डाक्टर हमीदुद्दीन साहिब आफ़ गोखोवाल, फैसलाबाद की वफात मरहूमीन का ज़िक्रे ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 6 मार्च 2020 ई. स्थान - मस्जिद 'बैयतुल फुतूह मोर्डन सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले सप्ताह में हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि का वर्णन हुआ था जिसका कुछ हिस्सा रह गया था जो आज मैं वर्णन करूँगा। हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि के बारे में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने यह वर्णन करते हुए कि मदीना के मुबल्लिग़ के तौर पर उनको भेजा गया था और उनकी ख़िदमतों का वर्णन करते हुए आप ने फ़रमाया कि "रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुदा तआला की तरफ़ से बार-बार ख़बर दी जा रही थी कि तुम्हारे लिए हिजरत का वक़्त आ रहा है और आप पर यह भी खुल चुका था कि आप की हिजरत का स्थान एक ऐसा शहर है जिसमें कुँएं भी हैं और ख़जूरों के बाग़ भी पाए जाते हैं। पहले आप ने यमामा के बारे में ख़्याल किया कि शायद वह हिजरत का स्थान होगा मगर जल्द ही यह ख़्याल आप के दिल से निकाल दिया गया और आप इस प्रतीक्षा में लग गए कि ख़ुदा तआला की पेशगोई के अनुसार जो शहर भी मुक़द्दर है वह अपने आपको इस्लाम का गहवारा बनाने के लिए पेश करेगा। इसी दौरान में हज का ज़माना आ गया। अरब के चारों तरफ़ से लोग मक्का में हज के लिए जमा होने शुरू हुए। मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी आदत के अनुसार जहां कुछ आदमियों को खड़ा देखते थे उनके पास जा कर उन्हें तौहीद का उपदेश सुनाने लग जाते थे और ख़ुदा की बादशाहत की ख़ुशख़बरी देते थे और अत्याचार और बुरे कामों और फ़साद और शरारत से बचने की नसीहत करते थे। कुछ लोग आपकी बात सुनते और हैरत का इज़हार कर के अलग हो जाते। कुछ बातें सुन रहे होते तो मक्का वाले आकर उनको वहां से हटा देते थे। कुछ जो पहले से मक्का वालों की बातें सुन चुके होते वे हंसी उड़ा कर आप से अलग हो जाते। इसी हालत में आप मिना की वादी में फिर रहे थे कि छः सात आदमी जो मदीना के रहने वाले थे आप की नज़र पड़े। आप ने उनसे कहा कि आप लोग किस क़बीला के साथ सम्बन्ध रखते हैं? उन्होंने कहा कि ख़ज़रज क़बीला के साथ। आप ने कहा कि वही क़बीला जो यहूदियों का हलीफ़ है? उन्होंने कहा हाँ। आप ने फ़रमाया क्या आप लोग थोड़ी देर बैठ कर मेरी बातें सुनेंगे? इन लोगों ने चूँकि आप का वर्णन सुना हुआ था और दिल में आप के दावा से कुछ दिलचस्पी थी, उन्होंने आप की बात मान ली और आप के पास बैठ कर आप की बातें सुनने लग गए। आप ने उन्हें बताया कि ख़ुदा की बादशाहत निकट आ रही है। बुत अब दुनिया से मिटा दिए जाऐंगे। तौहीद को दुनिया में स्थापित कर दिया जाएगा। नेकी और तक़्वा फिर एक बार दुनिया में स्थापित हो जाऐंगे। क्या मदीना के लोग इस महान नेअमत को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं?' इन लोगों ने कहा "उन्होंने आप की बातें सुनें और प्रभावित हुए और कहा आप की शिक्षा को तो हम स्वीकार करते हैं। बाक़ी रहा यह कि मदीना इस्लाम को पनाह देने के लिए तैयार है या नहीं उस के लिए हम अपने वतन जा कर अपनी क़ौम से बात करेंगे फिर हम दूसरे साल अपनी क़ौम का फ़ैसला आप को बताएँगे। ये लोग वापस गए और उन्होंने अपने रिश्तेदारों और दोस्तों में आप की शिक्षा का वर्णन करना शुरू किया। इस वक़्त मदीना में दो अरब क़बीले ओस और ख़ज़रज रहते थे और तीन यहूदी क़बीले अर्थात बनू क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर और बनू क़ेनक़ाअ। ओस और ख़ज़रज की आपस में लड़ाई थी। बनू क़ुरैज़ा और बनू नज़ीर ओस के साथ और बनू क़ेनक़ाअ ख़ज़रज के साथ मिले हुए थे। ज़मानो की लड़ाई के बाद उनमें यह एहसास पैदा हो रहा था कि हमें आपस में सुलह कर लेनी चाहिए। आख़िर आपसी परामर्श से यह क़रार पाया कि अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल जो ख़ज़रज का सरदार था उसे सारा मदीना अपना बादशाह स्वीकार कर ले। यहूदियों के साथ सम्बन्ध की वजह से ओस और ख़ज़रज बाईबल की पेशगोईयां सुनते रहते थे। जब यहूदी अपनी मुसीबतों और तकलीफों का हाल वर्णन करते तो उस के आख़िर में यह भी कह दिया करते थे कि एक नबी जो मूसा का प्रतिरूप होगा ज़ाहिर होने वाला है। इस का वक़्त क़रीब आ रहा है। जब वह आएगा हम फिर एक बार दुनिया पर ग़ालिब हो जाऐंगे। यहूद के दुश्मन तबाह कर दिए जाऐंगे। जब इन हाजियों से मदीना वालों ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दावा को सुना आप की सच्चाई उनके दिलों में घर कर गई और उन्होंने कहा यह तो वही नबी मालूम होता है जिसकी यहूदी हमें ख़बर दिया करते थे। अतः बहुत से नौजवान' ये सुनकर "मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा की सच्चाई से प्रभावित हुए और यहूदियों से सुनी हुई पेशगोईयां उनके ईमान लाने में सहायक हुईं।' मददगार हो गईं। अतः अगले साल हज के अवसर पर फिर मदीना के लोग आए। 12 आदमी इस बार मदीना से यह इरादा कर के चले कि वे मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के धर्म में दाख़िल हो जाऐंगे। उनमें से दस ख़ज़रज क़बीला के थे और दो ओस के। मिना में वे आपसे मिले और उन्होंने आप के हाथ पर इस बात का इक़रार किया कि वे सिवाए ख़ुदा के और किसी की उपासना नहीं करेंगे। वे चोरी नहीं करेंगे। वे बुरे काम नहीं करेंगे। वे अपनी लड़कियों को क़तल नहीं करेंगे। वे एक दूसरे पर झूठे आरोप नहीं लगाएँगे। न वे ख़ुदा के नबी की दूसरी नेक शिक्षाओं में ना-फ़रमानी करेंगे।

ये लोग वापस गए तो उन्होंने अपनी क़ौम में और भी ज़्यादा ज़ोर से तब्लीग़ शुरू कर दी। मदीना के घरों में से बुत निकाल कर बाहर फेंके जाने लगे। बुतों के आगे सिर झुकाने वाले लोग अब गर्दनें उठा कर चलने लगे। ख़ुदा के सिवा अब लोगों के माथे किसी के सामने झुकने के लिए तैयार ना थे। यहूदी हैरान थे कि सदियों की दोस्ती और सदियों की तब्लीग़ से जो तबदीली वे न पैदा कर सके इस्लाम ने वह तबदीली चंद दिनों में पैदा कर दी। तौहीद का उपदेश मदीना वालों के दिलों में घर

करता जाता था। एक के बाद दूसरे लोग आते और मुसलमानों से कहते हमें अपना धर्म सिखाओ लेकिन मदीना के नए मुसलमान न तो ख़ुद इस्लाम की शिक्षा से पूरी तरह वाक़िफ़ थे और न उनकी संख्या इतनी थी कि वे सैंकड़ों और हज़ारों आदमियों को इस्लाम के बारे में विस्तार से बता सकें। इसलिए उन्होंने मक्का में एक आदमी भिजवाया और मुबल्लिग़ का निवेदन किया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसअब नामी एक सहाबी को जो हब्शा की हिजरत से वापस आए थे मदीना में इस्लाम की तब्लीग़ के लिए भिजवाया। मुसअब मक्का से बाहर पहला इस्लामी मुबल्लिग़ था।"

(दीबाचा तफ़सीरुल क़ुरआन , अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 214 से 216)

एक और जगह इसी बात का वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ने यूं वर्णन फ़रमाया है कि "जब मदीना वालों को इस्लाम की ख़बर हुई और एक हज के मौक़ा पर कुछ मदीना वालों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिले और आप की सच्चाई को मानने वाले हो गए तो उन्होंने वापस जा कर अपनी क़ौम से वर्णन किया कि जिस रसूल के आने की मदीना में रहने वाले यहूदी वर्णन किया करते थे वह मक्का में पैदा हो गया है इस पर उनके दिलों में रसूल करीम की तरफ़ रग़बत पैदा हो गई और उन्होंने दूसरे हज पर एक वफ़द बना कर आप की तरफ़ भिजवाया इस वफ़द ने जब आप से विचार विमर्श किया तो आप पर ईमान ले आया और आप की बैअत कर ली। चूँकि इस वक़्त मक्का में आप का बहुत विरोध था यह मुलाक़ात एक वादी में मक्का वालों की नज़रों से छुपी हुई और वहीं बैअत भी हुई। इसलिए इसे बैअत उक़बा कहते हैं।' उक़बा का अर्थ है कि कठिन घाटी या पहाड़ी, कठिन पहाड़ी रास्ता। तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उन लोगों को मदीना के मोमिनों की तंज़ीम के लिए अफ़्सर निर्धारित किया और इस्लाम के प्रचार की ताकीद की और उनकी सहायता के लिए अपने एक नौजवान सहाबी मुसअब इब्न उमैर को भिजवाया ताकि वह वहां के मुसलमानों को धर्म सिखाएँ ... ये लोग जाते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह दावत भी दे गए कि अगर मक्का छोड़ना पड़े तो आप मदीना तशरीफ़ ले चलें। जब ये लोग वापस गए तो थोड़े ही समय में मदीना के लोगों में इस्लाम फैल गया और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ और सहाबा को मदीना भिजवा दिया जिन में हज़रत उमर रज़ि भी थे इस के बाद हिजरत का हुक्म मिलने पर आप ख़ुद वहां तशरीफ़ ले गए और आप के जाते ही बहुत थोड़ा समय में वे सब मदीना वाले जो मुशरिक थे मुसलमान हो गए।

(तफ़सीर कबीर भाग 1 पृष्ठ 171) (फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 203 ''उक़बा' ज़व्वार अकैडमी पब्लीकेशनज़ कराची 2003 ई)

हिजरत मदीना के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मुसअब बिन उमैर और हज़रत अब्बू अय्यूब अनसारी रज़ि के मध्य भाईचारा स्थापित फ़रमाई।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 88 मुसअब बिन उमैर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि जंग बदर और उहद में शामिल हुए। जंग बदर और उहद में मुहाजरीन का बड़ा झंडा हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि के पास था। जंग बदर में मुहाजरीन का बड़ा झंडा हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि के पास था जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को दिया था।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 89 मुसअब बिन उमैर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

फिर दूसरी रिवायत इस तरह है जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में लिखी है कि जंग उहद में भी मुहाजरीन का झंडा हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि के पास था

''आप ने लश्कर इस्लामी की रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने लश्कर इस्लामी की सफ़ बंदी की और विभिन्न दस्तों के अलग अलग उमैर निर्धारित फ़रमाए। इस अवसर पर आप को यह सूचना दी गई कि लश्कर क़ुरैश का झंडा तलहा के हाथ में हो। तलहा इस ख़ानदान से सम्बन्ध रखता था जो क़ुरैश के आदि वंश क़ुसय्या बिन कलअब के स्थापित किए गए प्रबन्ध के अधीन जंगों में क़ुरैश के झण्डे उठाने का हक़ रखता था। यह मालूम करके' जब यह पता लगा तो ''आप ने फ़रमाया। हम क़ौमी वफ़ादारी दिखाने के ज़्यादा हक़दार हैं। अत: आप ने हज़रत अली रज़ि से मुहाजरीन का झंडा लेकर मुसअब बिन उमैर रज़ि के सपुर्द फ़र्मा दिया जो इसी ख़ानदान के एक व्यक्ति थे जिससे तलहा सम्बन्ध रखता था।"

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 488)

हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि जंग उहद में शहीद हुए। जंग उहद के दिन हज़रत मुसअब बिन उमैर और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आगे लड़ रहे थे और लड़ते लड़ते शहीद हो गए। आप को इब्न कमि ने शहीद किया।

(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्ने हिशाम पृष्ठ 383 जंग उहद, मक़तल मुसअब बिन उमैर प्रकाशन दार इब्न हज़म बेरूत 2009 ई)

इतिहास में आता है कि जंग उहद के झण्डा उठाने वाले हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि ने झंडे की हिफ़ाज़त का हक़ ख़ूब अदा किया। जंग उहद के दिन हज़रत मुसअब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो झंडा उठाए हुए थे कि इब्न कमि जो घोड़े पर सवार था हमला-आवर हो कर हज़रत मुसअब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के दाएं बाज़ू पर जिस से आप ने झंडा थाम रखा था तलवार से वार किया और उसे काट दिया। इस पर हज़रत मुसअब यह आयत तिलावत करने लगे कि

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُل

और झंडा बाएं हाथ से थाम लिया। इब्न कमि बाएं हाथ पर वार कर के उसे भी काट डाला तो आप ने दोनों बाज़ुओं से इस्लामी झंडे को अपने सीने से लगा लिया। इस के बाद इब्न कमि ने तीसरी बार भाला से हमला किया और हज़रत मुसअब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के सीने में गाड़ दिया। भाला टूट गया। हज़रत मुसअब गिर पड़े। इस पर बनू अब्दुल दार में से दो आदमी सुबैवित बिन सअद बिन हरमला और अबू रोम बिन उमैर आगे बढ़े और झंडे को अबू रोम बिन उमैर ने थाम लिया और वह उन्हीं के हाथ में रहा यहां तक कि मुसलमान वापस हुए और मदीना में दाख़िल हो गए।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने साद भाग पृष्ठ 89 मुसअब बिन उमैर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

शहादत के समय हज़रत मुसअब की उम्र चालीस साल या इस से कुछ अधिक थी।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 5 पृष्ठ 176 मुसअब बिन उमैर दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 2003 ई)

इस घटना का वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने सीरत ख़ातमन्नबय्यीन में इस तरह लिखा है कि''क़ुरैश के लश्कर ने लगभग चारों तरफ़ घेरा डाल रखा था और अपने लगातार हमलों से प्रत्येक क्षण दबाता चला आता था इस पर भी मुसलमान शायद थोड़ी देर बाद सँभल जाते मगर ग़ज़ब यह हुआ कि क़ुरैश के एक बहादुर सिपाही अब्दुल्लाह बिन कमि मुसलमानों के झण्डा उठाने वाले मुसअब बिन उमैर ऊपर हमला किया और अपनी तलवार के वार से उनका दायाँ हाथ काट गिराया। मुसअब ने शीघ्र दूसरे हाथ में झंडा थाम लिया और इब्न कमि मुक़ाबला के लिए आगे बढ़े मगर उसने दूसरे वार में उनका दूसरा हाथ भी काट दिया। इस पर मुसअब ने अपने दोनों कटे हुए हाथों को जोड़ कर गिरते हुए इस्लामी झंडे को सँभालने की कोशिश की और उसे छाती से चिमटा लिया। जिस पर इब्न ने कमि उन पर तीसरा वार किया और अब की बार मुसअब शहीद हो कर गिर गए। झंडा तो किसी दूसरे मुसलमान ने शीघ्र आगे बढ़कर थाम लिया मगर चूँकि मुसअब का डीलडौल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मिलता था इब्न कमि ने समझा कि मैंने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को मार लिया है या यह भी संभव है कि इस की तरफ़ से यह परामर्श केवल शरारत और धोखा देने के ख़्याल से हो। बहरहाल उसने मुसअब के शहीद हो कर गिरने पर-शोर मचा दिया कि मैंने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) को मार लिया है। इस ख़बर से मुसलमानों के रहे सहे हौसले भी जाते रहे और उनकी ताकत बिलकुल बिघर गई।'

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम ए पृष्ठ 493)

जंग उहद में मुसलमानों का जो हौसला था उस के गिरने का यह भी एक बड़ा कारण हुई थी लेकिन बहरहाल बाद में इकट्ठे भी हो गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब हज़रत मुसअब की लाश के पास पहुंचे तो उनकी लाश चेहरे के बल पड़ी थी। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस के पास खड़े हो कर यह आयत तिलावत फ़रमाई कि

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا۔

(अल-आहज़ाब 24) कि मोमिनों में से ऐसे मर्द हैं जिन्होंने जिस बात पर अल्लाह से अहद किया था उसे सच्चा कर दिखाया। अत: उनमें से वे भी है जिसने अपनी

मन्नत को पूरा कर दिया और उनमें से वह भी हैं जो अभी इंतज़ार कर रहा है और उन्होंने हरगिज़ अपने व्यवहार में कोई तबदीली नहीं की। इस के बाद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया।

إِنَّ رَسُولَ اللّٰهِ يَشْهَدُ أَنَّكُمُ الشُّهَدَاءُ عِنْدَ اللّٰهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

कि ख़ुदा का रसूल गवाही देता है कि तुम लोग क़यामत के दिन भी अल्लाह के हाँ शुहदा हो। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को सम्बोधित कर के फ़रमाया कि इनका दर्शन कर लो और उन पर सलाम भेजो। इस ज़ात की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है क़यामत के दिन तक जो भी उन पर सलाम करेगा यह उस के सलाम का जवाब देंगे। हज़रत मुसअब के भाई हज़रत अबू रूम बिन उमैर हज़रत सुवेबत बिन सअद और हज़रत आमिर बिन रबीया ने हज़रत मुसअब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो को क़ब्र में उतारा।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 89-90 मुसअब बिन उमैर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि इस तरह वर्णन फ़रमाते हैं कि

''उहद के शहीदों में एक साहिब मुसअब बिन उमैर रज़ि थे। यह वह सब से पहले मुहाजिर थे जो मदीना में इस्लाम के मुबल्लिग़ बन कर आए थे। ज़माना जाहलीयत में मुसअब मक्का के नौजवानों में सबसे ज़्यादा अच्छे कपड़े और बांके समझे जाते थे और बड़े नाज़ तथा नेअमत में रहते थे। इस्लाम लाने के बाद उनकी हालत बिलकुल बदल गई। अत: रिवायत आती है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक बार उनके बदन पर एक कपड़ा देखा। जिस पर कई जोड़ लगे हुए थे। आप को उनका वह पहला ज़माना याद आ गया तो आप रोने लग गए। उहद में जब मुसअब शहीद हुए तो उनके पास इतना कपड़ा भी नहीं था कि जिससे उनके शरीर को छुपाया जा सकता। पांव ढाँकते थे तो सिर नंगा हो जाता था और सिर ढाँकते थे तो पांव खुल जाते थे। अत: आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म से सिर को कपड़े से ढांक कर पांव को घास से छिपा दिया गया।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक साहिबज़ादा हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 501)

सही बुख़ारी में रिवायत है कि हज़रत अब्दुर्र-रहमान बिन औफ़ रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के सामने इफ़तार के वक़्त खाना लाया गया और वह रोज़े से थे। कहने लगे कि मुसअब बिन उमैर रज़ि शहीद हुए और वह मुझसे बेहतर थे। वह एक ही चादर में कफ़नाए गए। अगर उनका सिर ढाँपा जाता तो उनके पांव खुल जाते। अगर पांव ढाँपे जाते तो उनका सिर खुल जाता। रावी कहते हैं कि मेरा ख़्याल है कि यह भी कहा कि हमज़ा शहीद हुए और वह मुझसे बेहतर थे। फिर उनके बाद वह कहने लगे हमें दुनिया की वे सुविधाएं प्राप्त हुई जो हुई या यूं कहा कि हमें दुनिया से वह कुछ दिया गया जो दिया गया और हमें तो डर है कि कहीं हमारी नेकियों का बदला जल्दी ही न मिल गया हो। फिर वह रोने लगे यहां तक कि खाना छोड़ दिया।

(सही अल-बुख़ारी हदीस1275)

अल्लाह तआला का ख़ौफ़ और भय और अगली दुनिया में अल्लाह तआला का व्यवहार उनके सामने आ गया जिसकी वजह से वह भावनात्मक हो गए कि ऐसी सुविधाएं हमें मिल गई है कि अल्लाह तआला ने हमें यहीं बदला न दे दिया हो यह न हो कि वहां जा के हमें कुछ न मिले।

हज़रत ख़ब्बाब बिन अर्त रज़ि रिवायत करते हैं कि हम ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ देश छोड़ा। अल्लाह तआला ही की रजामंदी हम चाहते थे और हमारा बदला अल्लाह के ज़िम्मा हो गया। हम में से ऐसे भी हैं जो मर गए और उन्होंने अपने बदले से कुछ नहीं खाया। इन्हीं में से हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि भी हैं और हम में ऐसे भी हैं जिनका मेवा पक गया और वे इस मेवे को चुन रहे हैं। हज़रत मुसअब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो उहद के दिन शहीद हुए और हमें सिर्फ एक ही चादर मिली जिस से हम उनको कफ़नाते। जब हम इस से उनका सिर ढाँपते तो उनके पांव खुल जाते और अगर उनके पांव ढाँपते तो उनका सिर खुल जाता तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमें फ़रमाया। हम उनका सिर ढाँप दें और उनके पांव पर इज़ख़र घास डाल दें।

(सही अल-बुख़ारी हदीस 1276)

तिर्मिज़ी की एक रिवायत है हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ि रिवायत करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। हर नबी को अल्लाह तआला ने सात नजीब रफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए हैं या फ़रमाया कि नक़बा प्रदान फ़रमाए हैं और मुझे चौदह प्रदान किए गए हैं तो हम ने निवेदन किया वे कौन से हैं? आप ने फ़रमाया मैं और मेरे दोनों बेटे, जाफ़र और हमज़ा, अबूबकर, उम्र, मुसअब बिन उमैर, बिलाल, सलमान, मिक़दाद , अबूज़र, अम्मार और अब्दुल्लाह बिन मसऊद

(सुनन अत्तिर्मज़ी हदीस 3785)

हज़रत आमिर बिन रबीया रिवायत करते हैं कि उनके पिता कहा करते थे कि हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि जब ईमान लाए उस वक़्त से जंग उहद में शहीद होने तक मेरे दोस्त और साथी रहे। वह हमारे साथ दोनों हिजरतों में हब्शा गए। मुहाजरीन में वह मेरे साथी थे। मैंने ऐसा आदमी कभी नहीं देखा जो उनसे अधिक अच्छे अख़लाक़ वाला हो और उनसे कम जिससे मतभेद हो।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 87 मुसअब बिन उमैर प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब जंग उहद के बाद मदीना लौटे तो आप को हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि की बीवी हज़रत हम बिन्त जहश मिलीं। लोगों ने उन्हें उन के भाई हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश की शहादत की ख़बर दी। इस पर उन्होंने इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन पढ़ा और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की। फिर लोगों ने उन्हें उनके मामू हज़रत हमज़ा की शहादत की ख़बर दी। इस पर उन्होंने इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन पढ़ा और उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की। फिर लोगों ने उन्हें उनके पति हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि की शहादत की सूचना दी। इस पर वह रोने लगीं और बेचैन हो गईं। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि औरत के लिए उस के पति का एक विशेष स्थान तथा मर्तबा होता है।

(अस्सीरतुन्नबविय्या ले इब्ने हशाम पृष्ठ 396 जंग उहद प्रकाशन दार इब्न हज़म बेरूत 2009 ई)

एक दूसरी रिवायत में हज़रत हमना बिन्त जहश के बारे में वर्णन मिलता है कि जब उनसे कहा गया कि तुम्हारा भाई शहीद कर दिया गया है तो उन्होंने कहा अल्लाह इस पर रहम करे और कहा इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। लोगों ने कहा तुम्हारे पति भी शहीद कर दिए गए हैं वह कहने लगीं हाय अफ़सोस इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि औरत को पति से ऐसा सम्बन्ध है जो किसी और से नहीं।

(सुनन इब्न माजा हदीस1590)

यह घटना एक ख़िताब में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-राबे ने अपने अंदाज़ में भी वर्णन फ़रमाई है जिसमें हज़रत मुसअब बिन उमैर रज़ि की शहादत की घटना और उनकी शहादत पर उनकी बीवी के जो भावनाओं थीं उनका वर्णन फ़रमाया है। इस तरह आप फ़रमाते हैं कि वे सहाबा या सहाबियात जिनके क़रीबी की संख्या एक से अधिक होती उनको ठहर ठहर कर इस अंदाज़ में ख़बर देते कि सदमा अचानक दिल को मग़लूब न कर ले। अत: जिस वक़्त हुज़ूर की सेवा में हज़रत अब्दुल्लाह की बहन हम्ना बिंत जहश हाज़िर हुईं तो आप ने फ़रमाया हे हम्ना तू सब्र कर और ख़ुदा से सवाब की उम्मीद रख। उन्होंने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह किस के सवाब की? आप ने फ़रमाया अपने मामू हमज़ा की। तब हज़रत हम्ना ने कहा إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ۔ غَفَرَ لَهُ وَرَحِمَهُ هَنِيئًا لَهُ الشَّهَادَةَ इस के बाद हज़ूर ने फ़रमाया कि हे हिम्ना सब्र कर और ख़ुदा से सवाब की उम्मीद रख। उसने निवेदन की कि यह किस के सवाब की। आप ने फ़रमाया अपने भाई अब्दुल्लाह की। इस पर हम्ना ने फिर यही कहा कि إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ۔ غَفَرَ لَهُ وَرَحِمَهُ هَنِيئًا لَهُ الشَّهَادَةَ। फिर आप ने फ़रमाया हे हम्ना सब्र कर और ख़ुदा से सवाब की उम्मीद रख। उन्होंने अर्ज़ किया हुज़ूर यह किस के लिए? फ़रमाया मुसअब बिन उमैर रज़ि के लिए। इस पर हम्ना ने कहा हाय अफ़सोस यह सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वास्तव में पति का बीवी पर बड़ा हक़ है कि किसी और का नहीं। इस से पूछा मगर तू ने ऐसी बात क्यों कहा। इस पर उन्होंने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह मुझे उस के बच्चों की यतीमी याद आ गई थी जिससे मैं परेशान हो गई और परेशानी की हालत में यह बात मेरे मुँह से निकल गई। यह सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसअब रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की औलाद के हक़ में यह दुआ की कि हे अल्लाह उनके सरपरस्त और बुज़ुर्ग उन पर शफ़क़त और मेहरबानी करें और उनके साथ सुलूक से व्यवहार करें।

(उद्धरित ख़ुत्बाते ताहिर ख़िलाफ़त से पहले पृष्ठ 363)

और फिर अल्लाह तआला ने उनके साथ यह अच्छा सुलूक रखा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ क़बूल हुई। यहां हज़रत मुसअब का वर्णन

ख़त्म हुआ। इंशा अल्लाह अगले अगले सहाबी का वर्णन होगा।

आजकल जो कोरोना वाइरस की महामारी फैली हुई है अब मैं कुछ बातें उस के बारे में भी कह कर लोगों को ध्यान दिलाना चाहता हूँ। जैसा कि हुकूमतों और विभागों की तरफ़ से हुकूमतों के ऐलान हो रहे हैं। इन सावधानी की कोशिशों पर हमें, सबको अनुकरण करना चाहिए। कुछ होम्योपैथी दवाईयां बहुत शुरू में मैं ने होमियोपैथ से मश्वरा कर के बताई थीं जो आरम्भ में सुरक्षा के तौर पर भी हैं और कुछ ईलाज के तौर पर भी। उनको इस्तिमाल करना चाहिए। यह एक संभावित ईलाज है। हम यह नहीं कह सकते कि सौ प्रतिशत ईलाज है या उस वाइरस का होमेयोपैथिक को पता है। यह ऐसा वाइरस है जिसका कोई ज्ञान नहीं लेकिन इस के लगभग इस किस्म की बीमारी का जो संभावित ईलाज हो सकता था उस के अनुसार ये दवाईयां चुनी की गई हैं। अल्लाह तआला उनमें शिफ़ा भी रखे। इसलिए प्रयोग करना चाहिए लेकिन इस के साथ ही सुरक्षात्मक सावधानियां भी ज़रूरी हैं जैसा कि ऐलान हो रहे हैं।

इस बारे में यह भी ज़रूरी है कि भीड़ से बचें। मस्जिद में आने वालों को भी सावधानी करनी चाहिए। अगर हल्का सा भी बुख़ार है, जिस्म टूट रहा है या छींकें नज़ला इत्यादि है तो फिर मस्जिद में नहीं आना चाहिए। मस्जिद के भी कुछ अधिकार हैं और यह मस्जिद का हक़ है कि वहां कोई ऐसा शख़्स न आए जिस से दूसरे प्रभावित हो सकते हों। किसी भी लगने वाली बीमारी का मरीज़ जो है इस को मस्जिद में आने से बहुत सावधानी करनी चाहिए। वैसे तो प्राय भी और आजकल ख़ासतौर पर छींक लेते समय भी हर एक को चाहिए कि छींक लेते समय मुँह पर हाथ रखे या मुँह पर रूमाल रखना चाहिए। कुछ नमाज़ी भी यह शिकायत करते हैं कि कुछ लोग हमारे साथ खड़े हुए छींकते हैं और मुँह के सामने न हाथ रखते, न रूमाल रखते हैं और फिर इतनी ज़ोर से छींक होती है कि इस के छींटे हम पर भी पड़ जाते हैं तो यह जो साथ के नमाज़ी हैं उनका भी हक़ है इसलिए हर एक को, नमाज़ियों को इस बात का भी ख़्याल रखना चाहिए और आजकल जैसा कि मैंने कहा खासतौर पर इस की सावधानी की ज़रूरत है। आजकल जो डाक्टर सावधानियां बताते हैं वे ये है कि हाथ और चेहरा साफ़ रखें। हाथ अगर गंदे हैं तो चेहरे पर हाथ न लगाऐं और हाथों को सेनेटाइज़र (sanitizer) लगा कर रखें या धोते रहें लेकिन मुसलमानों के लिए, हमारे लिए अगर कोई पाँच वक़्त का नमाज़ी है और पाँच वक़्त बाक़ायदा वुज़ू भी कर रहे हैं, नाक में पानी भी चढ़ा रहे हैं और इस से नाक साफ़ हो रहा है और सही तरह वुज़ू किया जा रहा है तो यह सफाई का एक ऐसा उच्च स्तर है जो सेनेटाइज़र की कमी भी पूरा कर देता है। आजकल क्योंकि मार्कीट से सेनेटाइज़र भी सुना है ग़ायब हो चुके हुए हैं। लोगों ने पीनक (panic) में सब कुछ ख़रीद लिया है, दुकान के शैलफ़ ख़ाली हैं और खासतौर पर ऐसी चीज़ें जो इस काम के लिए प्रयोग हो सकती हैं। बहरहाल जो वुज़ू है और अगर सही तरह वुज़ू किया जाए तो ज़ाहिरी सफाई भी है और इन्सान जब वुज़ू करेगा और फिर नमाज़ भी पड़ेगा तो यह एक रुहानी सफाई का भी माध्यम बन जाता है। और फिर आजकल तो खासतौर पर दुआओं की भी बहुत ज़्यादा ज़रूरत है। इसलिए इस तरफ़ हमें ख़ास ध्यान देना चाहिए। मस्जिदों के हक़ के बारे में मैं ने वर्णन किया तो यह भी वर्णन कर दूं कि खासतौर पर सर्दीयों में भी और आम भी मस्जिद में आने वालों को जो जुराबें पहन के आते हैं जुराबें भी रोज़ाना तबदील करनी चाहिऐं और धोनी चाहिऐं। अगर जुराबों में से, पैरों में से बू आ रही हो तो साथ खड़े नमाज़ियों के लिए कष्ट का कारण बनती है या जो पीछे नमाज़ी है सफ़ में सिज्दा कर रहा है इस के लिए तकलीफ़ का कारण बनती है। इस बारे में सावधानियां करनी चाहिए। आदेश तो ये है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कोई बू वाली चीज़ जैसे लहसुन प्याज़ इत्यादि खा कर मस्जिद में न आओ।

(सुनन अबू दाऊद किताबुल तआम बाब फ़ी अक्ल 3 हदीस 3823)

कई बार डकार इत्यादि भी आते हैं या वैसे मुँह से बू आती है इस की वजह से दूसरे जो नमाज़ी हैं उनकी तबीयत पर यह बुरा लगता है और नमाज़ियों के लिए और मस्जिद के माहौल के लिए भी यह तकलीफ़ की अवस्था हो जाती है बल्कि यह हुक्म है कि मस्जिद में आओ तो ख़ुशबू लगा कर आया करो।(सही अल-बुख़ारी किताबुल जमा हदीस 883)बल्कि उतनी सावधानियां है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कच्चा गोश्त लेकर मस्जिद के अंदर से भी न गुज़रो। (सुनन इब्न माजा किताबुल मसाजिद हदीस 748) इस के अतिरिक्त यह कि इन्सान वहां बैठा हो। अत: जिस्म की सफाई और फ़िज़ा की सफाई भी एक नमाज़ी के लिए बहुत ज़रूरी है। इस तरफ़ ख़ास ध्यान देना चाहिए लेकिन इस का मतलब यह भी नहीं है कि इस बहाने से मस्जिद में आना छोड़ दें। अपनी ज़ाहिरी हालत को देखकर अपने दिल से फ़तवा लेना चाहिए और हमेशा याद रखें कि अल्लाह तआला दिलों के हाल को जानता है और इसलिए अगर कोई बीमारी है तो डाक्टर से तसल्ली भी करवा लें कि यह किस किस्म की बीमारी है लेकिन एक दो दिन परहेज़ करना भी बेहतर है। फिर यह है कि आजकल कहा जा रहा है हाथ मिलाने से परहेज़ करो । यह भी बड़ा ज़रूरी है। कोई पता नहीं किस के हाथ किस किस्म के हैं। इस लिहाज़ से यद्यपि हाथ मिलाने से सम्बन्ध बढ़ता है, मुहब्बत बढ़ती है लेकिन आजकल इस बीमारी की वजह से परहेज़ करना ही बेहतर होता है। अब दुनियादार जो हैं जो पहले शोर मचाया करते थे वे भी हाथ नहीं मिलाते। औरतों से हाथ नहीं मिलाते। मर्दों से हाथ नहीं मिलाते नहीं। उनके भी लतीफ़े बनने लग गए हैं। अब जर्मनी की चांसलर जो है इस से इस के वज़ीर ने हाथ मिलाने से इनकार कर दिया और इस पर एक लतीफ़ा बना हुआ है। यहां भी मैंबर पार्लीमैंट ने कहा कि हम जो यह हाथ मिलाना नहीं कर रहे हैं कोरोना वाइरस की वजह से हम इस से बच रहे हैं और यह बड़ा अच्छा है क्योंकि हमारी तो रिवायत ही यह नहीं कि हाथ मिलाए। हमारी तो रिवायत यह है कि स्लयूट किया करते थे या सिर पर से हैट उतार के झुका करते थे। तो यह रिवाज जो पड़ गया है। फिर उसने यहां तक भी यह कह दिया कि औरतों से हम हाथ नहीं करते हैं बल्कि गले मिल कर kiss करने की कोशिश करते हैं तो यह भी हमें पता नहीं कि औरत को पसंद भी है कि नहीं और बिना वजह हम ज़बरदस्ती यह सारी हरकतें कर रहे होते हैं। ये अल्लाह तआला की बात तो मानने को तैयार नहीं थे लेकिन इस बीमारी ने, इस महामारी ने उनको कम से कम इस तरफ़ ध्यान दिला दी है। अल्लाह करे ख़ुदा तआला की तरफ़ भी उनका ध्यान हो जाए। अल्लाह तआला के हुक्म पर तो उनको मतभेद था जब हम कहते थे और बड़े प्यार से कहते थे कि इस तरह औरत मर्द का सलाम करना, हाथ मिलाना हमें मना है तो इस पर उनके बड़े शोर थे लेकिन अब सुना है अक्सर विभागों में और विभिन्न जगहों पर भी ये लोग इनकार करते हैं और बड़े rude तरीक़े से करते हैं। हम तो फिर प्यार से और बड़ी नर्मी से कहा करते थे कि यह हमारी शिक्षा है लेकिन अब यह कोरोना वाइरस के डर से इस सीमा तक सावधान हो गए हैं कि वहां आचरण का भी कोई पास नहीं है। बहरहाल इस महामारी ने इस लिहाज़ से कुछ हद तक उनका सुधार कर दी है। और जैसा कि मैंने कहा अल्लाह करे कि यह सुधार अल्लाह तआला की तरफ़ ले जाने वाली हो।

अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि इस महामारी ने और कितना फैलना है और किस हद तक जाना है। अल्लाह तआला की क्या तक़दीर है लेकिन अगर यह बीमारी ख़ुदा तआला की नाराज़गी की वजह से ज़ाहिर हो रही है और इस ज़माना में हम देखते हैं कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भव के बाद विभिन्न

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

प्रकार की महामारी ,बूमारियों ,भूकम्प, तूफ़ान बहुत ज़्यादा बढ़ गए हैं तो अल्लाह तआला की तक़दीर के बुरे प्रभावों से बचने के लिए अल्लाह तआला की तरफ़ रुजू करने की बहुत ज़्यादा ज़रूरत है और हर अहमदी को इन दिनों में ख़ासतौर पर दुआओं की तरफ़ भी ध्यान देना चाहिए और अपनी रुहानी हालत को भी बेहतर करने की तरफ़ ध्यान देना चाहिए और दुनिया के लिए भी दुआ करनी चाहिए। अल्लाह तआला उनको भी हिदायत दे। अल्लाह तआला दुनिया को तौफ़ीक़ दे कि वे बजाय दुनियादारी में ज़्यादा पड़ने के और ख़ुदा तआला को भूलने के अपने पैदा करने वाले ख़ुदा को पहचानने वाले भी हों।

अब उस के बाद में कुछ जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा। पहला जनाज़ा प्रिय तन्ज़ील अहमद बट का है जो अक़ील अहमद बट साहिब के बेटे थे। यह छोटा बच्चा ग्यारह साल का था । 27 फरवरी 2020 ई को इस की वफ़ात हुई। वफ़ात क्या है मेरे निकट तो यह शहादत है। इस की घटना यह है कि तंज़ील अहमद बट शाहदरा कॉलोनी दिल्ली गेट लाहौर को इस की पड़ोसी औरत ने 27 फरवरी को ज़ालिमाना तरीक़े से क़त्ल कर दिया था। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि रजेऊन। मौलवियों के फतवों ने वहां पाकिस्तान में अहमदियों को किसी भी बहाने से क़त्ल करना बड़ा आसान बना दिया है। यह क़तल भी इस का नतीजा है और इस लिहाज़ से मैं तो इस प्रिय को शहीदों में शामिल करता हूँ। वजह जो भी हुई लेकिन इस के पीछे अहमदिय का जो एक द्वेष है वह बहरहाल है और मासूम बच्चा था। अब तक जो रिपोर्टें मिली हैं उस के उस के अनुसार उस का कोई क़सूर नहीं था।

इस दुर्घटना का विस्तार के अनुसार प्रिय तन्ज़ील अहमद बट की माता ने दिनांक 27 फरवरी को उसे पड़ोसी के घर से अपनी छोटी बहन की गुड़िया लाने के लिए भिजवाया जो वह वहां छोड़ आई थी। हालाँकि इस घर में आना जाना भी था। क्या कारण हुआ अल्लाह बेहतर जानता है। एक दिन पहले वहां छोड़ आई थी तो इस को भिजवाया कि जा कर इस की गुड़िया ले आओ। काफ़ी प्रतीक्षा के बाद जब वह बच्चा वापस न आया तो माता ख़ुद पड़ोसी के घर गईं। पहले तो पड़ोसियों ने दरवाज़ा नहीं खोला और काफ़ी देर के बाद दरवाज़ा खोला तो बच्चे के बारे में पूछने पर पड़ोसन ने बताया कि वह गुड़िया ले कर वापस चला गया है। इस पर प्रिय की माता ने अपने पति अक़ील साहिब को सूचना दी। उन्होंने शीघ्र जमाअत की इंतिज़ामीया के साथ मिलकर बच्चे की तलाश शुरू की और पुलिस में भी रिपोर्ट दर्ज करा दी। फिर जब गली के सी सीटी वी कैमरे पर देखा गया तो इस में बच्चा पड़ोसियों के घर जाता हुआ तो नज़र आया लेकिन वापस नहीं निकला। इस पर पुलिस की मदद से घर की तलाशी ली गई तो एक ट्रंक में से बच्चे की लाश बरामद हुई जिस पर पुलिस ने बताया कि उनको कत्ल करने वाली औरत के पति ने पहले ही बता दिया था कि इस की बीवी ने बच्चे को क़तल कर के लाश ट्रंक में छिपा दी है। इस पति ने मालिक मकान के लड़के के साथ मिलकर इस बच्चे को क़तल किया था जिसका अब उसने स्वीकार भी कर लिया है।

प्रिय तंज़ील अहमद बट 20 नवम्बर 2009 ई को लाहौर में पैदा हुआ। वक़्फ़ नौ की तहरीक में शामिल था। अत्फ़ालुल अहमदिया की तंज़ीम का सक्रिय मेम्बर था। जमाअत के प्रोग्राम में बाक़ायदगी से शामिल होता था। अपनी क्लास के ज़हीन छात्रों में इस की गिनती होती था। चौथी क्लास का छात्र था। और वफ़ात के बाद जब उस का रिज़ल्ट आया तो 750 में से 729 नम्बर ले कर क्लास में यह बच्चा फ़र्स्ट आया था। प्रिय की माता ने बताया कि तन्ज़ील मेरे बच्चों में से सबसे ज़्यादा आज्ञाकारी था और कोई भी काम करना हो तो हमेशा पहले मुझसे आज्ञा लेकर किया करता था। अगर कोई पड़ोसी और ओहदेदार भी उसे कोई काम कहता तो शीघ्र काम करता। कभी इन्कार नहीं करता था यहां तक कि क़तल करने वाली पड़ोसन भी इस से कई बार काम लेती थी और यह उस की हमेशा आज्ञापालन करता था और इस के काम करता था। स्कूल के टीचर और जमाअत के ओहदेदार बच्चे से बहुत ख़ुश थे। हमेशा उस की प्रशंसा किया करते थे। ऐम टी ए के प्रोग्राम बाक़ायदा देखने वाला था। ख़ासतौर पर बच्चों के प्रोग्राम और ख़ुत्बे सुनने वाला था। नमाज़ की अदायगी के लिए बड़ी बाक़ायदगी से मस्जिद जाता था। अगर कभी उस के पिता फ़ैक्ट्री से थके हुए वापस आते और मस्जिद जाने के लिए ज़रा सुस्ती दिखाते तो प्रिय उनको ज़बरदस्ती ज़ोर देकर मस्जिद ले के जाया करता था। प्रिय मरहूम ने पीछे रहने वालों में अपने पिता अक़ील अहमद बट, माता नाइला अक़ील और चार बहन भाई यादगार छोड़े हैं। दो भाई हैं और दो बहनें हैं। अल्लाह तआला उसे अपने प्यार की आग़ोश में जगह दे और क़ातिलों को उन के अन्जाम तक पहुंचाए और माँ बाप को भी सब्र और शान्ति प्रदान फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा ब्रीगेडियर बशीर अहमद साहिब भूतपूर्व अमीर ज़िला रावलपिण्डी का है जो डाक्टर मुहम्मद अब्दुल्लाह साहिब के बेटे थे। यह 16 फरवरी को रावलपिण्डी में 87 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में उनकी पत्नी के इलावा दो बेटे और तीन बेटियां शामिल हैं।

ब्रीगेडियर बशीर अहमद साहिब 1931 ई में ज़िला गुजरात के एक इंतिहाई मुख़लिस ख़ानदान में पैदा हुए। आपके पिता डाक्टर मुहम्मद अब्दुल्लाह साहिब ने ख़ुद बैअत कर के सिलसिला अहमदिया में शामिल हुए थे। आरम्भिक शिक्षा उन्होंने कादियान से हासिल की। ब्रीगेडियर साहिब ने 1947 ई में मैट्रिक की परीक्षा पास की। 1952 ई में पाकिस्तान की मिल्ट्री अकैडमी के sixth long course मैं पाक फ़ौज में कमीशन लिया। 1982 ई में फ़ौज से बहैसीयत ब्रीगेडियर रिटायर हुए। फिर एक लंबा समय तक इस्लामाबाद के पाल्सी इंस्टीटियूट के प्रमुख के रूप में देश की सेवा की तौफ़ीक़ पाई। इस तरह आपको 66 साल तक देश की सेवा की तौफ़ीक़ मिली।

जमाअत के ख़िदमते ब्रीगेडियर साहिब की ये हैं कि 2012 ई में उनको मैंने जमाअत रावलपिण्डी का अमीर निर्धारित किया था और 9 फरवरी 2020 ई तक उनको बतौर अमीर रावलपिण्डी शहर और ज़िला ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। 1979 ई में आपका तबादला रावलपिण्डी में हुआ। 16 साल तक नायब अमीर और सैक्रेटरी तालीम जमाअत अहमदिया रावलपिण्डी शहर और ज़िला की ख़िदमतें करने की तौफ़ीक़ मिली। फ़ज़ले उम्र फाउंडेशन के डायरेक्टर और मज्लिस शूरा की विभिन्न कमेटीयों के मैंबर रहे। ब्रिगेडियर साहिब मरहूम बहुत मुख़लिस थे। इख़लास के साथ धर्म की ख़िदमत करते थे। मिलनसार, दयालु, समाज सेवा करने वाले और ज़रूरतमन्दों के काम दिल की गहराई के साथ किया करते थे। धर्म की सेवा के मामलों में बड़े नियम वाले और वक़्त के पाबंद थे। ख़ुद भी तेज़ी से सेवा करते थे और अपने साथियों को भी इस की नसीहत करते और धर्म के कामों में बल्कि किसी काम में भी सुस्ती बर्दाश्त नहीं करते थे। अपनी आमिला के मैंबरान को जो काम सुपुर्द करते, वक़्त आने पर उनका फॉलो उप (follow up) ज़रूर करते। बहुत दुआ करने वाले, इबादत करने वाले और ख़िलाफ़त से मुहब्बत करने वाले मुख़लिस वजूद थे। आख़िर उम्र तक आपकी याददाश्त भी बड़ी अच्छी थी। आँ हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आशिक़ थे और अपने अहमदी होने पर हमेशा अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया करते थे। क़ुरआन करीम और आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबें हमेशा आपके सिरहाने मौजूद रहा करती थीं। उनका अध्ययन बड़ा व्यापक था। ग़रीबों और ज़रूरत मंदों की खुले दिल और ख़ामोशी से आर्थिक सहायता प्रदान किया करते थे। विशेष बेवाओं की ज़रूरतें पूरी करने के लिए बहुत ज़्यादा फ़िक्रमंद होते थे और प्रत्येक समय मदद के लिए तैयार रहते थे। और सहायता भी इतनी करते थे कि कई लोग और ख़ानदान आपकी

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

स्थायी आर्थिक सहायता से लाभान्वित हो रहे थे। एक शख़्स ने यह भी लिखा कि इस की दुकान जल गई नुक़्सान हुआ तो ख़ामोशी से एक रक़म मुझे दी और कहा कि कभी बाद में इस का वर्णन न करना। फिर घर जा के उसने खोला तो वह रक़म दो लाख रुपया थी और जब कारोबार ठीक हो गया और उसने वापस करने की कोशिश की तो उन्होंने कहा मैंने इसलिए दिया ही नहीं था।

ताहिर महमूद साहिब जो मुरब्बी सिलसिला ज़िला रावलपिन्डी हैं लिखते हैं कि अमीर साहिब बहुत धीमे मिज़ाज के मालिक थे। रहम दिल , कम बोलने वाले और इंतिहाई दुआ करने वाले थे। जुम्अ: के दिन जुम्अ: से काफ़ी पहले इवाने तौहीद में तशरीफ़ ले आते और इंतिहाई विनय और करूणा से नवाफ़िल अदा करते। जल्दी जल्दी नमाज़ अदा करने वालों को कादियान के सहाबा और बुज़ुर्गों की घटनाएं सुनाते जहां उन्होंने तर्बीयत हासिल की। ठहर-ठहर कर नमाज़ पढ़ने वालों पर ख़ुश का इज़हार करते। मस्नून दुआओं और तस्बीहों की तरफ़ ध्यान दिलाते। ख़ुद भी दुआ करने वाले और लंबी नमाज़ पढ़ने वाले थे और लोगों को नमाज़ की तरफ़ ख़ास ध्यान दिलाने वाले थे। ज़रूरतमंदों, दोस्तों की मदद करने वाले तो हर एक ने लिखा है। अगर कोई शुक्रिया भी अदा करता तो इस से भी मना करते थे। और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की किताबों से तो इश्क़ था और उन किताबों के मआरिफ़ का मीटिंग में वर्णन किया करते थे। फ़ज़ले उम्र फ़ाउंडेशन के डायरेक्टर भी थे। नासिर शम्स साहिब जो वहां फ़ज़ल उम्र फ़ाउंडेशन के सैक्रेटरी हैं वह लिखते हैं कि 2011 ई के आरम्भ से 2019 ई के आख़िर तक फ़ज़ल उम्र फ़ाउंडेशन के डायरेक्टर रहे। बोर्ड आफ़ डायरेक्टर्ज़ के समस्त इज्लासों में बावजूद आयु के और कमज़ोर सेहत के बड़ी बाक़ायदगी से शामिल होते। आपकी दुआ और मश्वरों से भरपूर रहनुमाई एक दिहाई तक हमें उपलब्ध रही। मरहूम बेहद मुख़लिस, तक़्वा वाले और ख़िलाफ़त के साथ सच्चे वफ़ादार ख़ादिम सिलसिला थे। एक ख़ास ख़ूबी जिसको कहते हैं मैंने ख़ुद देखा वह अल्लाह तआला से सम्बन्ध और बहुत विनय से नमाज़ अदा करना था। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

तीसरा जनाज़ा डाक्टर हमीदुद्दीन साहिब पुत्र मुहम्मद दीन साहिब का है जो 121 जब गोखोवाल, फैसलाबाद के रहने वाले थे। 29 फरवरी 2020 ई को उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन। मरहूम के ख़ानदान में अहमदियत आपके पिता आदरणीय मुहम्मदुद्दीन साहिब और दादा आदरणीय फ़तहुद्दीन साहिब आफ़ हरसयां ज़िला गुरदासपुर के इकट्ठे बैअत करने से आई थी जिन्होंने हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ी अल्लाह तआला अन्हो के दौर में बैअत की थी। मरहूम की पैदाइश कादियान में हुई। आपकी माता के वास्तविक चाचा हज़रत मौलाना मुहम्मद इब्राहीम साहिब क़ादयानी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। ईसाइयत के वह प्रसिद्ध आलिम थे और लंबा अरसा तक मदर्रसा अहमदिया कादियान के उस्ताद भी रहे। भारत विभाजन के बाद मरहूम का ख़ानदान फैसलाबाद आकर आबाद हो गया। पेशे के लिहाज़ से डिस्पांसर थे और इस हवाले से उनको पूरे इलाक़े में इन्सानियत की सेवा करने की तौफ़ीक़ मिली। ज़रूरतमंदों का मुफ़्त ईलाज किया करते थे। बड़े सादा-मिज़ाज, मुत्तक़ी, बचपन से नमाज़ रोज़ों के पाबंद थे। शाइरुल्लाह का सम्मान करने वाले थे। ख़िलाफ़त से मुहब्बत करने वाले निहायत शफ़ीक़, अल्लाह तआला पर भरोसा रखने वाले, एक ईमानदार और दियानतदार इन्सान थे और कभी किसी को किसी बात का इनकार नहीं करते थे। एक भलाई चाहने वाले और सबकी मदद करने की कोशिश करते थे। जमाअत के विभिन्न ओहदों पर उन्होंने ख़िदमत की भी तौफ़ीक़ पाई। उनके एक बेटे करीमुद्दीन शमस साहिब मुरब्बी सिलसिला आजकल तन्ज़ानिया में ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं जो कि मैदान अमल में व्यस्त होने की वजह से आपके जनाज़ा में भी शामिल नहीं हो सके। आपके दामाद मुरब्बी सिलसिला और एक दामाद मुअल्लिम सिलसिला हैं। एक नवासा जामिया अहमदिया रब्वह में दर्जा शाहिद का छात्र है। इसी तरह कई पोते पोतियां, नवासे नवासियाँ वक़्फ़ नौ की बरकत वाली तहरीक में शामिल हैं। अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके दर्जात बुलंद करे। उनकी नस्लों में भी उनको वफ़ा के साथ अपनी बैअत का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाता रहे।

जैसा कि मैं ने कहा नमाज़ों के बाद जनाज़ा ग़ायब भी पढ़ाऊंगा

(अल-फ़ज़ल इंटरनैशनल 17 मार्च 2020 पृष्ठ 13 से 17)

☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

क़ाज़ख़िस्तान के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इसके बाद क़ाज़ख़िस्तान से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। यह वफ़द 18 मर्दों पर आधारित था जिन में 17 अहमदी दोस्त थे और एक ग़ैर अज़ जमाअत दोस्त शामिल भी थे।

वफ़द के एक मैंबर ने हुज़ूर अनवर की सेवा में निवेदन किया कि मुझे क़ाज़ाख़िस्तान के जमाअत के लोगों ने हुज़ूर अनवर की सेवा में सलाम पहुंचाने की दरख़ास्त की थी। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया "वाअलैकुम अस्सलाम।"

महोदय ने निवेदन किया कि हमारी जमाअत तरक़्क़ी कर रही है। जमाअत की रजिस्ट्रेशन में कठिनाइयां हैं। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया "अल्लाह तआला फ़ज़ल फ़रमाए।"

सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया क़ज़ाख़िस्तान ने भी हुज़ूर अनवर की सेवा में दुआ का निवेदन किया। हुज़ूर अनवर ने उनसे पूछा कि क्या आप नियमित अपनी रिपोर्टें भिजवाते हैं? इस पर सदर ख़ुद्दाम ने निवेदन किया कि तीन माह में एक रिपोर्ट भिजवाता हूँ।

एक अहमदी दोस्त ने निवेदन किया कि मैं 2011 ई से अहमदी हूँ। ख़ुदा तआला ने मेरी दुआ क़बूल की है और मुझे जलसा पर आने की तौफ़ीक़ मिली है। मेरी माता अहमदी नहीं हैं। जलसा की शामिल होने से मेरी माता पर गहरा असर हुआ है। हमारे लिए दुआ करें कि ख़ुदा तआला हमें वास्तविक अहमदी बनाए। जलसा पर सेवकों ने जिस तरह बड़ी मेहनत और सब्र से काम किया है उसका हम पर गहरा प्रभाव है। हम उनके शुक्रगुज़ार हैं।

एक अहमदी दोस्त ने निवेदन किया कि मैं साल 2006 ई से अहमदी हूँ। हमारे देश का एक नया सदर बना है। नए चुनाव हुए हैं ख़ुदा करे कि हमारे सारे मामले ठीक हो जाएं और हमारी रजिस्ट्रेशन की राह में मुश्किल रुकावटें भी दूर हो जाएं।

एक लजना मैंबर ने निवेदन किया कि उनके पति जरीउल्लाह साहिब इस समय जामिया घाना में पांचवें साल में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। इसी तरह उनका छोटा भाई जामिया घाना के लिए चला गया है और पहले साल में है।

कज़ाख़िस्तान से आने वाले एक साहिब ने निवेदन किया कि जलसा के प्रबन्ध बहुत आला थे। मेरा बेटा भी जामिया घाना में शिक्षा प्राप्त कर रहा है और उसने ऊला क्लास पास कर ली है। इस के लिए दुआ की दरख़ास्त है।

एक औरत ने दुआ की दरख़ास्त करते हुए कहा एक बेटा और एक बेटी और सात पोतियां और नवासे, नवासियाँ हैं। दुआ करें कि ख़ुदा मेरे बेटे को बेटा प्रदान फ़रमाए। वहां जमाअत की रजिस्ट्रेशन नहीं है इस का दु:ख होता है। ख़ुदा तआला इस राह में आने वाली रोकें और मुश्किलों को दूर फ़र्मा दे।

एक औरत ने निवेदन किया कि हम ने लजना आर्गेनाईज़ की है। मैं भूतपूर्व सदर लजना हूँ। मेरे माता पिता पिछले साल जलसा में शामिल हुए थे। हमें हुज़ूर अनवर की तरफ़ से ख़ुतूत के जवाब मिलते हैं और हुज़ूर अनवर की दुआएं हमारे हक़ में क़बूल होती हैं

एक औरत ने निवेदन किया कि हम हुज़ूर अनवर के बहुत शुक्र गुज़ार हैं। जलसा के प्रबन्ध बहुत उच्च थे। मेरे दो बेटे हैं उन के लिए दुआ करें कि मैं उनकी सही तर्बीयत कर सकूं और वे दोनों जमाअत के मुबल्लिग़ बन सकें।

एक मेहमान ने निवेदन किया कि मैं अहमदी नहीं हूँ। जमाअत से मेरा परिचय हो रहा है। मैंने जो यहां देखा है बिलकुल एक अलग-थलग दुनिया है। हर चीज़ बहुत मुनज़्ज़म है। लोग बहुत मिलनसार और मुहब्बत करने वाले हैं। इस का मुझ पर गहरा प्रभाव है। मेरी इच्छा है कि मैं अपने बाक़ी समस्त मेम्बरों को भी साथ ला सकूं।

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

एक औरत ने निवेदन किया कि जलसा के प्रबन्ध बहुत आला थे। हर चीज़ मुनज़्ज़म थी। हमारे देश का प्रधानमन्त्री नया आया है। अब हालात बदले हैं। हुज़ूर दुआ करें कि हमारी अगली नस्लों को वहां कोई ख़ौफ़ न हो।

एक औरत ने निवेदन किया कि वह जलसा पर पहले भी आ चुकी हैं। हुज़ूर अनवर को ख़त लिखा था। हुज़ूर अनवर ने इसका जो जवाब प्रदान फ़रमाया मैं उसकी शुक्र गुज़ारा हूं। हुज़ूर अनवर की दुआओं से हमारी मुश्किलें दूर हो रही हैं।

कज़ाख़िस्तान के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात 1 बजकर 15 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के मेंबरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीरें बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए एक बच्चे को अपने साथ लगाकर प्यार किया और इस बच्चे ने भी तस्वीर बनवाई।

वफ़द में शामिल औरतें ने हुज़ूर अनवर की सेवा में दरख़ास्त की कि हुज़ूर हमारे सिरों पर हाथ रखकर हमें दुआ दें। हुज़ूर अनवर ने दया करते हुए उनकी दरख़ास्त को क़बूल फ़रमाते हुए उन्हें दुआओं से नवाज़ा।

हंगरी के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार हंगरी से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। हंगरी से इस साल 19 मर्दों पर आधारित वफ़द आया जिस में 8 मेहमान और 11 अहमदी लोगों शामिल हुए। सब से पहले वफ़द के मेम्बरों ने बारी-बारी परिचय करवाया।

सावा विन्स साहिब (Szava Vince) जिनका सम्बन्ध रूमा क़ौम से है और उन्हें लोग Gypsy भी कहते हैं। उन्होंने अपनी क़ौम की फ़लाह और भलाई के लिए और उनकी legal मदद के लिए एक संस्था बनाई है। इस संस्था के 16 हज़ार से अधिक मैंबर हैं। यह पहली बार जलसा में शामिल हुए हैं

उन्होंने अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहा कि उनको अपने काम की वजह से विभिन्न लोगों से मिलना पड़ता है। यह विभिन्न आयोजनों में जाते हैं, उनके प्रोग्रामों में जाते हैं। यहूदियों के प्रोग्रामों में गए हैं, मुसलमानों के प्रोग्रामों में भी गए हैं और ईसाईयों के पास भी गए हैं। उन्होंने बताया कि जो मुहब्बत और इन्सानियत का सम्मान , बराबरी और भाईचारा यहां जलसा के अवसर पर देखा है ऐसा कभी भी अपनी ज़िन्दगी में नहीं देखा। और न ही किसी और प्रोग्राम में देखा।

उन्होंने जमाअत का शुक्रिया अदा किया कि जमाअत ने उन्हें अवसर दिया है कि वह यहां पर आकर ख़ुद देखें कि हम जो कहते हैं "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" इसका व्यवहारात्मक इज़हार भी यहां हो रहा है। उन्होंने बताया कि यह अनुभव उन के लिए एक lifetime का अनुभव है जिसको भुलाया नहीं जा सकता और यह जलसा में शामिल होने की वजह से एक ख़ास भावनात्मक अवस्था में हैं।

मुलाक़ात के बाद महोदय ने बताया कि मुहब्बत , इज़्ज़त और अमन जो हमने यहां देखा है वह पहले कहीं भी नहीं देखा। हम पहले भी मुसलमानों की सहयोग कर रहे हैं, खासतौर पर अपने देश में जहां मुसलमान मुहाजरीन के समस्याओं की वजह से उन के लिए एक ख़ास नफ़रत है। हम मुसलमानों के लिए पहले भी आवाज़ उठाते रहे हैं लेकिन अब तो हम और अधिक ज़ोर और शोर से आवाज़ उठाएँगे कि वह मुसलमान जिनकी बातें मीडिया करता है यह बिलकुल ग़लत बातें हैं। जो वह मीडिया वहां दिन रात दिखाता रहता है, वह बिलकुल ग़लत है। जो प्यार मुहब्बत आपसी अमन और सम्मान हमने यहां देखा है वह हमने और कहीं नहीं देखा।

महोदय की पत्नी Mrs Racz Gyullane कहने लगीं यह बात हमारे लिए बड़े सम्मान का कारण है कि हम हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात कर रहे हैं और बेहद ख़ुशी मुझे और मेरे पति को हुई है कि हमें जमाअत की तरफ़ से जलसा की दावत मिली और मैं इस के लिए भी शुक्र गुज़ार हूं।

गाबूर तामाशा (Gabor Tamas) साहिब एक रीफार्म चर्च के पादरी हैं उनके अधीन हंगरी का एक गांव और अन्य चार इलाक़े हैं। यह पिछले चार पाँच सालों से जलसा में आ रहे हैं यह अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहते हैं :जलसा मेरी ज़िन्दगी का एक हिस्सा बन चुका है। यद्यपि मैं मज़हब से ईसाई हूँ लेकिन यहां जलसा में आकर में अपने आपको रुहानी तौर पर नया महसूस करता हूँ और अपने ईमान में और अधिक मज़बूती महसूस करता हूँ। आपके भाईचारा , अमन और मुहब्बत को देखकर एक ख़ास मज़बूती मिलती है। मैं मुहाजरीन के कैम्पों में जाकर सेवा भाव से काम करता हूँ और वहां जमाअत का परिचय भी करवाता हूँ।

वफ़ा हुस्न शर्मानी साहिबा यमन में हालात ख़राब होने की वजह से अपने बेटे और माता के साथ हिजरत कर के Hungary आईं। पिछले साल भी वह जलसा में शामिल हुईं और इस साल भी उनको शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली। यह मुसलमान हैं और पिछली बार जब यह औरतों की तरफ़ गईं तो उन्होंने अपने आपको अधिक comfortable महसूस किया। और इस साल उन्होंने कहा कि औरतों में जा कर उन्होंने सारे प्रोग्राम सुने हैं। इन के लिए यह एक ख़ास रूहानियत से भरा हुआ और एक भावनात्मक माहौल था।

माजा केमेनी साहिबा (Maja Kemeny) अपनी भावनाओं को इज़हार करते हुए कहती हैं: यह मेरे लिए यहां पहला अवसर है। यहां हर एक इतना प्यार करने वाला और मदद देने वाला था। जब कभी भी मुझे कोई मसला पेश आता तो कोई न कोई फ़ौरी तौर पर मेरी मदद करता। मेरा यहां कोई भी बुरा अनुभव नहीं हुआ। वक़्त के ख़लीफ़ा के साथ बहुत ही अच्छा वक़्त था। मुझे यह बात बहुत ही अच्छी लगी कि प्रत्येक ख़ुद वक़्त के ख़लीफ़ा से बात कर सका। यह मेरा पहला अवसर था, उम्मीद है कि यह मेरा आख़िरी अवसर न होगा। आप लोगों का शुक्रिया।

हंगरी के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात 1 बज कर 25 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के समस्त मेम्बरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया

मालटा के वफ़द की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार Malta देश से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मालटा से13 मर्दों पर आधारित वफ़द आया था। वफ़द के मेंबरों ने बारी बारी अपना परिचय करवाया।

वफ़द के मेम्बरों ने निवेदन किया कि यहां जलसा पर बहुत से देशों के लोग जमा थे। हम ने यहां देखा है कि सब आपस में मुत्तहिद तथा एक दूसरे का भला चाहने वाले थे। हमने यहां बहुत कुछ सीखा है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि यहां आपको वास्तविक इस्लामी शिक्षा देखने को मिली है।

मालटा से जलसा में शामिल होने वाली तीन औरतें मेहमान औरतों की मार्की में भी गईं। उन्होंने वर्णन किया कि "वहां हमारा बहुत ख़्याल रखा गया। हमें कई बार पूछा जाता रहा कि हमें किसी चीज़ की ज़रूरत तो नहीं। हमारे खाने और हमारी समस्त ज़रूरतों का बहुत उत्तम तौर पर ध्यान रखा गया। सामूहिक तौर पर तक़रीरों के अनुवाद का स्तर और आवाज़ की क्वालिटी बहुत अच्छी थी। हमने समस्त बातों को गहरी दिलचस्पी से सुना। समस्त मालूमात में अनुकरणीय हिदयतें और राहनुमाई की गई। औरतें की मार्की में एक फ़ैमिली का सा माहौल था। ऐसे था कि जैसे हम एक दूसरे को बहुत अच्छी तरह शायद सदियों से जानते हैं मगर हमारी तो पहली बार मुलाक़ात हो रही थी।

मालटा से आने वाली इन तीनों औरतें मेहमानों ने ज़िक्र किया कि "औरतें की मार्की मैं अधिक आसानी थी और हमें दोनों तरफ़ के माहौल को अनुभव करने का अवसर मिला और हमें इस्लामी शिक्षाओं कि जिस में मर्द तथा औरतों के लिए अलग प्रबन्ध किया जाता है इस की सही और गहरी हिक्मत और फ़िलासफ़ी को समझने का अवसर मिला और हम अपने तजुर्बा के अधार पर यह कह सकती हैं कि इस्लामी शिक्षाएं बहुत गहरी और हिक्मत से भरी हैं और औरतें अलग जगह पर अधिक आसानी और सन्तोष महसूस करती हैं और उन्हें अपने प्रबन्ध सँभालने और अपनी योग्यताओं के जौहर दिखाने का व्यापक अवसर मिलता है।

मालटा से जलसा में शामिल करने वाली एक मेहमान औरत जिनकी हाल ही में शादी हुई है। वह अपनी भावनाओं को इस तरह प्रकट करती हैं कि हुज़ूर अनवर के औरतों से ख़िताब से प्रभावित हुई हूँ जिस में हुज़ूर ने मर्द तथा औरतों के अधिकार और ज़िम्मेदारियों की तरफ़ ध्यान दिलाया। घरों में समस्याएँ पेश आती रहती हैं और इस सिलसिला में हुज़ूर अनवर का यह मार्गदर्शन हमेशा के लिए बहुत ही लाभदायक साबित होगा। उन्होंने वर्णन किया कि इस्लाम में शादी से पहले पवित्रता और पाकीज़गी की शिक्षा बहुत ही हिक्मत वाली और सार गर्भित है और हुज़ूर ने रुहानी तथा जिस्मानी पवित्रता और तक़्वा और सफाई की तरफ़ भी राहनुमाई फ़रमाई है। उन्होंने वर्णन किया कि अगर वह दोबारा जलसा में शामिल हुईं तो सारा वक़्त औरतों की मार्की मैं गुज़ारेंगी क्योंकि वहां जो माहौल मयस्सर आया वह बहुत ही धार्मिक और रुहानी था।

मालटा से एक मेहमान औरत जो कि पेशा के एतबार से वकील हैं उन्होंने अपने भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा: जलसा के प्रबन्ध , मेहमान नवाज़ी और जमाअत अहमदिया के लोगों की निहायत सकारात्मक और मुहब्बत भरे सुलूक और मेहमान नवाज़ी से प्रभावित हुई हूँ। 10 बैअत की शर्तों को बहुत ही सारगर्भित और हिक्मत और दानाई की मुँह बोलती तस्वीर हैं। उन्होंने वर्णन किया कि इतनी बड़ी

संख्या में एक जगह पर लोग जमा थे मगर उस के बावजूद सफ़ाई का बहुत उच्च स्तर बरक़रार रखा गया

मालटा से एक और मेहमान औरत ने वर्णन किया कि औरतों की मार्की मैं उन्हें अधिक आन्नद आया और अपनेपन का एहसास बहुत बढ़ गया है।

मालटा से जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने वाले एक ईसाई दोस्त जो कि पहले बतौर पादरी के भी कुछ देशों में काम कर रहे हैं और बाद में उन्होंने कुछ कारणों से इन ज़िम्मेदारियों से अलैहदगी धारण कर ली थी। उन्होंने अपनी भावनाओं को इस तरह वर्णन किया कि "मैंने आज तक कभी ऐसा मुनज़्ज़म और उच्च स्तर का इज्तिमा नहीं देखा जिस में हज़ारों लोग सम्मिलित हूँ और हर तरफ़ मुहब्बत और भाईचारा का इज़हार हो।

मालटा के एक मुसलमान दोस्त जो कि एक स्थानीय कौंसल के कौंसिलर हैं , उन्होंने अपने भावनाओं का इस तरह इज़हार किया है कि:"जमाअत अहमदिया धार्मिक स्वतंत्रता पर विश्वास रखती है और अनुकरणीय एक माहौल पैदा करती है कि अपनी identity को क़ायम रखते हुए दूसरे धर्मों के लोगों को भी अपने साथ शामिल करते हैं। कहने लगे अगर एक शब्द में वर्णन करूँ तो यही कह सकता हूँ कि "Ahmadiyyat is perfect" अहमदियत संख्या में तो छोटी जमाअत है मगर अपनी मौजूदगी और अपनी कोशिशों की वजह से यह तराज़ू में बहुत भारी है। कहने लगे अहमदियत को विश्वव्यापी विरोध का सामना है जो मुझे परेशान करता है। अहमदियत निहायत उम्दा रंग में इन्सानियत की सेवा कर रही है और बहुत ज़ोर से integration पर काम कर रही है। उन्होंने वर्णन किया कि अहमदियत इस्लाम के ख़िलाफ़ पैदा किए गए नकारात्मक और नफ़रत फैलाने वाले व्यवहारों के ख़िलाफ़ एक बहुत ही प्रभावित करने वाली इन्क़िलाबी तहरीक है। अहमदियत आज इस्लाम के प्रतिरक्षा में सूचि में सब से ऊपर दिखाई देती है। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: मज़हब दिल का मामला है। क़ुरआन करीम कहता है कि ला इकराहा फिद्दीन बहैसीयत इन्सान हम सबको इकट्ठा रहना चाहिए।

महोदय ने निवेदन किया कि हम मालटा मैं अहमदी मुबल्लिग़ के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। हमें इस बात से बहुत ख़ुशी है। जमाअत अहमदिया मालटा वहां के स्थानीय मालटीज़ लोगों के साथ मिलकर बहुत अच्छा काम कर रही है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि अहमदिया जमाअत का यह स्वभाव दुनिया में हर जगह नज़र आता है। अब यहां जो मेहमानों के साथ प्रोग्राम था इस में पाँच सौ के लगभग जर्मन मेहमान जमा थे। अहमदी लोगों के उन लोगों के साथ अच्छे सम्बन्ध हैं तो ये इस प्रोग्राम में आए थे। एक दूसरे के साथ मिल-जुल कर रहते हैं तो इस वजह से भी आए थे।

मालटा से जलसा में शामिल होने वाले एक ईसाई दोस्त ने वर्णन किया कि जलसा के समस्त प्रबन्ध, मेहमान-नवाज़ी , भाई चारा और जमाअत अहमदिया के नेता हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस के व्यक्तित्व से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूँ।

हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के बाद उन्होंने अपनी भावनाओं को वर्णन करते हुए कहा कि हुज़ूर से मुलाक़ात में एक रुहानी माहौल था। हुज़ूर के वजूद में एक रुहानी क़ुव्वत का एहसास हुआ जो दिल को आपकी तरफ़ झुका देती है। आपका समस्त मेहमानों के साथ उनके level के अनुसार बड़ी मुहब्बत से बातचीत फ़रमाना बहुत ही प्रभावित करने वाला था।

मालटा से एक और शामिल होने वाले दोस्त ने अपनी भावनाओं का इस तरह इज़हार किया है कि हुज़ूर अनवर के साथ मिलकर एक विशेष किस्म की क़ुव्वत का एहसास हुआ। अमन की ताक़त आपके वजूद से स्पष्ट थी। हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाने में एक गहरे और रुहानी छूने का एहसास नुमायां अनुभव था।

मालटा से शामिल होने वाली एक ईसाई मेहमान ने अपनी भावनाओं को इस तरह इज़्हार किया कि हमारे लिए बहुत बड़ा सम्मान है। हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात इस सारे दौरे का सबसे प्रमुख हिस्सा था। हम इस बात पर हुज़ूर अनवर के धन्यवादी हैं। हुज़ूर बेशक बहुत महान इन्सान हैं। कहने लगीं कि इच्छा थी कि अधिक वक़्त मिलता , ताकि हुज़ूर से अधिक बातें करने का अवसर मिलता

मालटा के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाक़ात 1 बजकर 40 मिनट तक जारी रही। मुलाक़ात के आख़िर पर वफ़द के मेंबरों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

8 जुलाई2019 ई (दिनांक सोमवार)

आज़रबाईजान के वफ़द की हुज़ूर से मुलाक़ात

इस के बाद देश आज़रबाईजान से आने वाले वफ़द ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात की पाई।

आज़रबाईजान से आने वाले एक मुबाइयात अहमदी नौजवान ने निवेदन किया कि हमने यहां आकर बहुत अधिक रुहानी माहौल पाया है। यह किस तरह हो कि हमारे वापस जाने के बाद भी हमारा यह माहौल रहे।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि अपनी पाँच नमाज़ों की हिफ़ाज़त करें, सूरत फ़ातिहा याद करें और फिर उस का अनुवाद याद करें। इय्यका नअबुदो दोहराते रहीं। ख़ुदा तआला की इबादत पर पूरा ध्यान दें। इसी तरह इहदेन-स्सिरातल मुस्तक़ीम पर ज़ोर दें और इस्तिग़फ़ार करती रहीं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया इन्सान का काम कोशिश करना है और दुआओं के साथ ख़ुदा तआला से मदद चाहना है। हर काम करते हुए यह याद रखें कि ख़ुदा तआला मुझे देख रहा है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि ख़ुदा याद रहेगा तो फिर सारे काम सही होंगे

आज़रबाईजान से आग़ा सफ़ असग़रू साहिब जलसा में सम्मिलित हुए थे। उन्हें जलसा के दौरान हुज़ूर अनवर के मुबारक हाथ पर बैअत करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। यह अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहते हैं कि मैंने कभी सोचा भी न था कि मैं रूहानियत की इतनी बुलंदीयों को देखूँगा जो ख़लीफ़तुल मसीह की ज़ात में हैं। मुरब्बी महमूद साहिब ने मुझे जमाअत के बारे में और इस के अक़ीदों के बारे में मालूमात देनी शुरू कीं। मुझे यह सब बनावटी और झूठ लगा। मैंने इन बातों को सुनते ही इनकार कर दिया लेकिन मालूम नहीं था सच की यह क़ुव्वत मुझे जल्द अपनी तरफ़ खींच लेगी। यक़ीनी तौर पर जमाअत की सच्चाई और इस के पेश की गई दलीलें बहुत दृढ़ हैं। वीडियो में देखे जाने वाले नज़ारे यहां आकर हक़ीक़त में देखने का अवसर मिला। हुज़ूर को क़रीब से देखने के लिए मैं जुम्अ: में पहली सफ़ में जा कर बैठा था। हुज़ूर को तशरीफ़ लाता देखकर बहुत ही लज़्ज़त महसूस की। यह रुहानी लज़्ज़त उस समय और बढ़ गई जब हुज़ूर की मुबारक ज़बान से कुरआन करीम की तिलावत सुनी। ऐसे लगा कि यह आवाज़ और इस का रुहानी प्रभाव सिर्फ हुज़ूर से ही विशेष है। जलसा में बहुत से लोगों से मिलने का अवसर मिला लेकिन हर एक से मिलकर एक ही जैसा ख़ुशगवार एहसास होता था जो यक़ीनी तौर पर दलील है कि यह एक इलाही जमाअत है।

अल्लाह तआला ने मुझे हुज़ूर के हाथ पर बैअत का सौभाग्य प्रदान किया। पहली बार जब मुझे यह सूचना दी गई तो मुझे यक़ीन न आया। मैंने चार पाँच बार पूछा कि क्या वास्तव में हुज़ूर के मुबारक हाथ पर हाथ रखकर बैअत करूँगा। मेरी आँखों में आँसू आ गए और साथ ही परेशान हो गया कि मैं तो इस योग्य नहीं। फिर मैंने दुरूद शरीफ़ और इस्तिग़फार का विर्द शुरू किया। बैअत का अवसर आने तक मैं न खा सका और न ही कुछ और कर सका। अल्हम्दो लिल्लाह बैअत का अवसर भी आ गया। हुज़ूर अपने नूर वाले चेहरे के साथ पधारे तो मेरी आँखें साथ नहीं दे रही थीं। अल्लाह तआला ने मुझे ऐसे क़ुव्वत प्रदान करने वाला रुहानी अवसर से नवाज़ा कि मैं बैअत के बाद सिज्दा में गिर गया और इस ज़ात का शुक्र अदा किया

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

जिसने अपने इस नीच गुनाहगार बंदे को अपने इतने पवित्र बंदे के हाथ पर बैअत की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई। जलसा के बाद मुझे मालूम हुआ कि हुज़ूर अनवर के साथ हमें एक मुलाक़ात का अवसर मिल जाएगा। मैं सारा दिन कई सवाल सोचता रहा। ज़ेहन में यह भी आता रहा कि बैअत के वक़्त जो चेहरा देखा था इस को इतनी जल्दी दोबारा देखूँगा। जब मुलाक़ात का अवसर आया तो मैं अपने ज़हन में सोचे हुए कई सवालों को भूल गया और सिर्फ सबसे अधिक फ़िक्रमंद करने वाला सवाल याद रहा कि आया जलसा के बाद अपने देश जाने के बाद क्या रूहानियत का यह स्तर क़ायम रहेगा? या उस को कैसे क़ायम रख सकते हैं। अल्हम्दो लिल्लाह हुज़ूर ने मेरी यह मुश्किल हल फ़र्मा दी। आपके जवाब ने मुझे तसल्ली प्रदान फ़र्मा दी कि नमाज़, सूरा फ़ातिहा, اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ، और इस्तिग़फार उस का हल है। मैं यहां से अह्द कर के जा रहा हूँ कि अगले जलसा तक इस नसीहत पर अनुकरण करता रहूँगा और अगले जलसा पर आकर हुज़ूर को बताऊँगा।

एक दोस्त तालए हैमली साहिब ने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए बताया: सबसे पहले मैं शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ कि मुझे इस जलसा सालाना में दावत दी गई। मुझे बहुत ख़ुशी हुई कि मैं अहमदिया मुस्लिम जमाअत के इस जलसा में सम्मिलित हुआ। अहमदिया मुस्लिम जमाअत का मुहब्बत सबसे नफ़रत किसी से नहीं एक ऐसा माटो है जिसने मुझे सबसे अधिक प्रभावित किया। यह एक ऐसे ज़बरदस्त शब्द हैं जिस में जमाअत का सम्पूर्ण परिचय मौजूद है। फ्रैंकफ़र्ट आने पर एयरपोर्ट से जमाअत के ख़ुद्दाम ने हमें रीसीव किया वहां से लेकर अन्तिम समय तक वे हमारे साथ रहे। उन्होंने हमारी बे-इंतिहा मदद की। वे बहुत मददगार और दोस्ताना सम्बन्ध से मिले थे।

मेरे ख़्याल में जलसा का प्रोग्राम बहुत ही अहम है। लोगों को जमाअत के बारे में मालूमात देते हैं और एक दूसरे से मिलने जुलने के अवसर पैदा होते हैं। जलसा में शामिल होने वाले अच्छे आचरण थे। इतने बड़े जलसा को आर्गेनाईज़ करना और इतने अच्छे तरीक़ा से पाया-ए-पूर्णता तक पहुंचाना मेरे लिए इस बात की दलील था कि इस को वास्तव ख़ुदा की मदद प्राप्त है और ये एक मुक़द्दस ईवंट है।मैंने ख़लीफ़तुल मसीह को देखा, इन कोसना। उनके विचार और नसीहतें इंतिहाई महत्व पर आधारित थीं। मेरे लिए यह सम्मान था कि मैं ख़लीफ़ा की बातों को सुन सका और उन्हें देख सका। मेरी ज़िन्दगी में पहली बार ऐसा नज़ारा हुआ कि हज़ारों लोग सिर्फ इस्लामी शिक्षा के मक़सद के लिए और अल्लाह के ख़लीफ़ा के लिए जमा हुए। वहां पर हर देश से लोग आए मगर उनका आपस में प्यार तथा मुहब्बत और नेक सुलूक एक ऐसी फ़िज़ा पैदा कर रहा था जो किसी भी दुनियावी प्रोग्राम में नामुमकिन है। जलसा ने मुझे रुहानी दुनिया से परिचित करवाया और इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से आगाह किया। इस से पहले मेरे ज़हन में इस्लाम के बारे में बे-इंतिहा शंकाएं थी। यद्यपि मैं ख़ुद भी मुसलमान हूँ मगर जमाअत अहमदिया की शिक्षाओं ने मेरे ज़हन को साफ कर दिया और मुझे वास्तव में इस बात पर गर्व है कि मैं मुसलमान हूँ जमाअत को चाहिए कि अपनी तब्लीग़ को और अधिक ज़ोर से दुनिया में करे ताकि मेरे जैसे अंजान लोगों को इस्लाम की हक़ीक़त का पता चले। ख़लीफ़तुल मसीह की एक आवाज़ पर उठना बैठना और इशारा पर ख़ामोश होजाना एक ऐसा उदाहरण सामने लेकर आया जो कि शायद मैं हज़ारों दुनियावी जलसे में शामिल होकर भी न देख सकूं। हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात के लिए मैंने ज़ेहन में कई सवाल सोचे थे मगर जब मुलाक़ात हुई तो एक ऐसा प्रभाव था कि मैं बोल ही न सका। ख़लीफ़ा का रोब तथा शान वास्तव में दुनिया से अलग है।

आज़रबाईजान के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात 1 बजकर 52 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर वफ़द के मेंबरों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

क्रोशिया और स्लोवेनिया के वफ़द की हुज़ूर से मुलाक़ात

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार देश क्रोशिया और स्लोवेनिया से आने वाले वफ़द के मेंबरों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। क्रोशिया और स्लोवेनिया से ग्यारह लोगों पर आधारित वफ़द आया था।

स्लोवेनिया देश से आने वाली एक औरत ने निवेदन किया कि वह ह्यूमन राईट्स की फ़ील्ड में काम कर रही हैं। जलसा के अत्यधिक उच्च प्रबन्ध से बहुत प्रभावित हैं। हर काम सुनियोजित तरीक़ा पर जारी था।

क्रोशिया से आने वाली एक क्रोशियन औरत ने निवेदन किया कि वह एग्रीकल्चर की फ़ील्ड में हैं और वक़्त एक dairy प्राजैक्ट पर काम कर रही हैं। जलसा में पहली बार आई हैं और सारे प्रबन्ध देखकर बहुत हैरान हैं कि इतनी बड़ी संख्या है और सारे काम रज़ाकार सेवक कर रहे हैं। इस बात ने मुझे बहुत हैरान किया है।

क्रोशिया से आने वाले एक मेहमान ने निवेदन किया कि उनका सम्बन्ध बोस्निया से है और वह क्रोशिया में निवासी हैं और फ़ोटोग्राफ़र हैं। यहां का प्रबन्ध देखकर में बहुत हैरान हुआ हूँ। जलसा के समस्त प्रबन्ध बड़े अच्छे तरीक़ पर आयोजित किए गए थे। आप लोग छोटी उम्र से ही अपने बच्चों को तर्बीयत देते हैं ताकि वे बड़े हो कर काम कर सकें।

देश क्रोशिया से आने वाले एक पादरी वरदान ओबो चीना साहिब भी इस वफ़द में शामिल थे। महोदय ने कहा: यह मेरे लिए एक बहुत बड़ा सम्मान और ख़ुशी का कारण है कि मैं जलसा सालाना जर्मनी 2019 ई मैं शामिल हो सका। बेहतरीन प्रबन्ध और विभिन्न ख़ुश-मिज़ाज लोगों से मिलने के इलावा मेरा ज़ाती ईमान यह है कि जमाअत अहमदिया आज की दुनिया के लिए एक अमन और उम्मीद है जो हमें कठिनाइयों और मुश्किलों से निकाल सके।

बहैसीयत ईसाई पादरी मेरा दृढ़ ईमान है कि मुसलमान और ईसाई दोनों धर्मों में यही शिक्षा साझी है कि ख़ुदा एक रहमान और रहीम ख़ुदा है जो कि हमारे लिए आपसी सम्बन्ध और भाईचारा वाली ज़िन्दगी बसर करने की बहुत प्रमुख बुनियाद है और जिसके साथ हमारी मुक्ति जुड़ी है। मुझे आज ये बातें जलसा पर महसूस हुई हैं और इन्शा अल्लाह मैं इस जलसा पर ज़रूर दोबारा आऊँगा

क्रोशिया और स्लोवेनिया के वफ़द की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात 2 बजकर 5 मिनट तक जारी रही। इस के बाद 2 बजकर 15 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने तशरीफ़ लाकर नमाज़ ज़ुहर तथा असर जमा करके पढ़ाई।

ऐलान निकाह

नमाज़ों के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने 38 निकाहों का ऐलान फ़रमाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ख़ुत्बा निकाह की मस्नून आयतों की तिलावत के बाद फ़रमाया

"इस वक़्त में निकाहों के ऐलान करूँगा। एक लम्बी सूचि है। कुल 38 निकाह हैं। मुझ से निकाह पढ़वाने वाले जिस शौक़ से दरख़ास्तें करते हैं, इसी शौक़ से अपने निकाहों और शादियों को निभाया भी करें। बहुत सारे मुझ से निकाह पढ़ा लेते हैं और कुछ समय बाद पता लगता है कि मसले पैदा हो गए हैं। अत: यह भी दुआ करें कि जो आपस में रिश्ते क़ायम करते हैं , वे क़ायम रहने वाले रिश्ते हों। सहन का माद्दा पैदा हो और एक दूसरे का ख़्याल रखने वाले हूँ। अल्लाह तआला आपको इस की तौफ़ीक़ दे। "

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित निकाहों का ऐलान फ़रमाया

प्रिया नवाल मलिक पुत्री आदरणीय मुहसिन मलिक साहिब (कील, जर्मनी) का निकाह प्रिय वलीद अहमद (मुरब्बी सिलसिला जमाअत अहमदिया जर्मनी) पुत्र रशीद अहमद साहिब के साथ तय पाया।

प्रिया नाइला महमूद पुत्री आदरणीय शाहिद महमूद साहिब (हेमबर्ग, जर्मनी) का निकाह प्रिय उम्र रशीद मलिक (मुरब्बी सिलसिला जर्मनी पुत्र आदरणीय वहीद अहमद मलिक साहिब के साथ तय पाया।

प्रिया राफ़िया चौधरी पुत्री आदरणीय गुलज़ार खोखर साहिब (हेमबर्ग,जर्मनी का निकाह प्रिय शम्सुल मलिक चौधरी (छात्र जामिया अहमदिया जर्मनी) पुत्र आदरणीय ज़हीरुल मलिक चौधरी साहिब के साथ तय पाया।

प्रिया सूबिया इक़बाल मलिक वाकिफ़ा नौ)पुत्री आदरणीय ज़फ़र इक़बाल मलिक साहिब (हेमबर्ग, जर्मनी) का निकाह प्रिय अताउल करीम अन्सर छात्र जामिया अहमदिया जर्मनी) पुत्र आदरणीय चौधरी सईद अन्सर साहिब के साथ तय पाया।

प्रिया रिज़वाना ताहिर (वाकिफ़ा नौ) पुत्री आदरणीय ताहिर महमूद आबिद साहिब मुबल्लिग़ इंचार्ज गिनी कनाकरी का निकाह प्रिय शरजील ख़ालिद (छात्र जामिआ अहमदिया जर्मनी) पुत्र आदरणीय हाफ़िज़ फ़रीद अहमद ख़ालिद साहिब के साथ तय पाया।

प्रिया ज़रताब अहमद पुत्री आदरणीय महमूद अहमद साहिब (आफ़ फैसलाबाद,पाकिस्तान) का निकाह प्रिय हाफ़िज़ अताउल काफी (छात्र जामिआ अहमदिया) रब्वह पुत्र आदरणीय रशीद अहमद साहिब के साथ तय पाया।

प्रिया ईशा मशआल पुत्री आदरणीय अब्बास अहमद साहिब (हनाओ जर्मनी)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 9 April 2020 Issue No.15

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

का निकाह प्रिय जलीद तबस्सुम पुत्र आदरणीय फ़रीद तबस्सुम साहिब भूतपूर्व मुरब्बी सिलसिला (फ़रीद बर्ग, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया हानिया तहमीना क़ैसर पुत्री आदरणीय जमाल अहमद क़ैसर साहिब (होइज़न शटम ,जर्मनी) का निकाह प्रिय आक़िब महमूद आसिफ़ पुत्र आदरणीय आसिफ़ महमूद साहिब (ओफ़न जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया हन्नान नासिर पुत्री आदरणीय जावेद इक़बाल साहिब (कोलोन,जर्मनी) का निकाह प्रिय नोमान नासिर (वक़्फ़ नौ) पुत्र आदरणीय मुहम्मद सादिक़ नासिर साहिब (ज़रलोन, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया ख़ुंसा नवीद (वाकिफ़ा नौ)पुत्री आदरणीय इक़बाल नवीद साहिब (मारबुर्ग, जर्मनी) का निकाह प्रिय राज़िक़ अहमद तारिक़ (वक़्फ़ नौ)पुत्र आदरणीय महमूद अहमद तारिक़ साहिब (रीडशटड,जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया नय्या नसरीन अबरार अहमद पुत्री आदरणीय अबरार मुबश्शिर अहमद साहिब (फरीद बर्ग, जर्मनी) का निकाह प्रिय आमिर महमूद (वक़्फ़ नौ) पुत्र आदरणीय शाहिद महमूद साहिब (हिमबर्ग, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया हिबतुर्रहमान पुत्री आदरणीय अब्दुल रहमान साहिब (नौए फॉहरन, जर्मनी) का निकाह प्रिय हस्सान अहमद ख़ान पुत्र आदरणीय आसिफ़ ख़ान साहिब (बेटक हाइम, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया इनाम बैग पुत्री आदरणीय तारिक़ ज़हीर बेग साहिब मरहूम लिमबुरग , जर्मनी का निकाह प्रिय नवेद अहमद पुत्र आदरणीय हामिद सुलतान अहमद साहिब (ज़ीलंगन शटड, जर्मनी के साथ तय पाया

प्रिया दुर्दाना असलम पुत्री आदरणीय मुहम्मद असलम साहिब (नारोवाल, पाकिस्तान) का निकाह प्रिय अयाज़ अहमद डोगर (छात्र जामिया अहमदिया घाना) पुत्र आदरणीय रियाज़ अहमद डोगर साहिब मुरब्बी सिलसिला तंज़ानिया के साथ तय पाया।

प्रिया नादिया चीमा पुत्री आदरणीय नासिर महमूद चीमा साहिब मरहूम (लीओडन शायड, जर्मनी) का निकाह प्रिय अबरार अहमद गोन्दल पुत्र आदरणीय मुबश्शिर अहमद गोन्दल साहिब (म्यूनख़, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया नायाब देश पुत्री आदरणीय मुहसिन मलिक साहिब (कील, जर्मनी)का निकाह प्रिय मलिक रिफ़ाक़त अहमद पुत्र आदरणीय मलिक सआदत अहमद साहिब (बूनिंग शटीट्, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया लुबना मुबश्शिर अहमद पुत्री आदरणीय मलिक मुबश्शिर अहमद साहिब (आओगस् जर्मनी) का निकाह प्रिय मलिक मन्सूर अहमद पुत्र आदरणीय नादिर हुसैन मलिक साहिब आफ़ लंदन, यू के के साथ तय पाया।

प्रिया अज़्का अहमद पुत्री आदरणीय नासिर अहमद साहिब (माक्स डोरफ़, जर्मनी) का निकाह प्रिय औसाफ़ नवीद आज़म पुत्र आदरणीय चौधरी मुनव्वर अहमद आज़म साहिब (हानाओ, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया मरवा अहमद पुत्री आदरणीय बासित करीम साहिब (फ़रंकफ़र्ट, जर्मनी) का निकाह प्रिय सारिम अहमद पुत्र आदरणीय ताहिर अहमद साहिब (फ़रंकफ़र्ट, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया हाला आरिफ़ पुत्री आदरणीय मुहम्मद आरिफ़ साहिब (बादडुरक हाइम, जर्मनी) का निकाह प्रिय अबरार अहमद पुत्र आदरणीय ग़ुलाम रसूल साहिब (बाददुरक हाइम, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया तय्यबा मलिक पुत्री आदरणीय देश अबरारुल हक़ साहिब (वाइटर शटड, जर्मनी) का निकाह प्रिय हस्सान अहमद सुलेमान पुत्र आदरणीय मुहम्मद इसहाक़ सुलेमान साहिब (ग्रीस हाइम , जर्मनी) के साथ तय पाया

प्रिया इरम ख़ान(वाकिफ़ा नौ)पुत्री आदरणीय आमिर हमीद ख़ान साहिब (बाद करास नाख़, जर्मनी) का निकाह प्रिय साइम अहमद ख़ान पुत्र आदरणीय अब्दुल मजीद ख़ान साहिब (ऐश बोर्न, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया बासमा अहमद पुत्री आदरणीय सिद्दीक़ अहमद डोगर साहिब (आखन , जर्मनी) का निकाह प्रिय अर्सलान अरशद पुत्र आदरणीय अरशद महमूद साहिब (कोलोन , जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया तालहा महमूद वाकिफ़ा नौ पुत्री आदरणीय तारिक़ महमूद साहिब मरहूम (लाहर, जर्मनी) का निकाह प्रिय अबदुर्रहीम रशीद पुत्र आदरणीय अबदुर्रशीद साहिब (बूओख़ होलज़,) जर्मनी के साथ तय पाया।

प्रिया लबीबा रफ़ीक़ अहमद (वाकिफ़ा नौ) पुत्री आदरणीय राना रफ़ीक़ अहमद साहिब (लांगन,जर्मनी) का निकाह प्रिय मुनीब अहमद पुत्र आदरणीय नज़ीर अहमद साहिब (बरगश गल्ड बाख़, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया ताबिंदा अहमद पुत्री आदरणीय अज़ीज़ अहमद साहिब (रीडशटड, जर्मनी) का निकाह प्रिय आतिफ़ अशर्फ़ पुत्र आदरणीय अशर्फ़ अली साहिब (रीडशटड ,जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया हिरा लोधी ख़ालिद पुत्री आदरणीय महमूद लोधी ख़ालिद साहिब (रुस्सलज़ हाइम, जर्मनी) का निकाह प्रिय मुहम्मद नासिर इक़बाल पुत्र आदरणीय मुहम्मद इक़बाल साहिब (कोयटन अनहा लुट, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया सीमाब ख़ालिद फ़ारूक़ पुत्री आदरणीय ख़ालिद महमूद फ़ारूक़ साहिब मरहूम (आफ़ फैसलाबाद, पाकिस्तान) का निकाह प्रिय अतहर मक़सूद (छात्र जामिया अहमदिया रब्वह) पुत्र आदरणीय मुहम्मद मक़सूद साहिब के साथ तय पाया।

प्रिया तहरीम अहमद पुत्री आदरणीय नासिर अहमद साहिब (ओल्डन बुर्ग, जर्मनी) का निकाह प्रिय उज़ैर अहमद ताहिर पुत्र आदरणीय बशीर अहमद ताहिर साहिब (फ़ेयरन हाइम,जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया रिमशा अहमद पुत्री आदरणीय शफ़ीक़ अहमद साहिब (ऊबर डिंग,जर्मनी) का निकाह प्रिय मुहम्मद एहसान याक़ूब (वाकिफ नौ) पुत्र आदरणीय मुहम्मद याक़ूब साहिब (ओफ़न बाख जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया हिना अहमद पुत्री आदरणीय जमील अहमद साहिब (वेज़ बादिन, जर्मनी का निकाह प्रिय मन्सूर अहमद बाजवा पुत्र आदरणीय मजीद अहमद बाजवा साहिब (डेटसन बाख,जर्मनी के साथ तय पाया

प्रिया तहमीना असलम पुत्री आदरणीय मुहम्मद असलम साहिब (वाबरन, जर्मनी) का निकाह प्रिय क़ासिद अहमद ताहिर (वक़्फ़ नौ) पुत्र आदरणीय मुबश्शिर अहमद ताहिर साहिब (हाईडल बर्ग, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया अफ़्शां ज़हीर पुत्री आदरणीय ज़हीर अहमद साहिब मरहूम (कोबलनज़,जर्मनी) का निकाह प्रिय वजाहत अहमद ख़ान (वाकिफ नौ) पुत्र आदरणीय बिशारत अहमद ख़ान साहिब (कोबलनज़,जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया सोसन अहमद (वाकिफ़ा नौ) पुत्री आदरणीय अज़ीज़ अहमद ताहिर साहिब (फरीद बर्ग, जर्मनी) का निकाह प्रिय मुहम्मद अंसर ख़ान पुत्र आदरणीय मुहम्मद अहसन ख़ान साहिब (हानोवर, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया रमला रियाज़ पुत्री आदरणीय मुनीर अहमद रियाज़ साहिब (हेमबर्ग, जर्मनी) का निकाह प्रिय अय्याज़ महमूद (वाकिफ नौ) पुत्र आदरणीय फ़य्याज़ महमूद साहिब (स्वीकाओ, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया लैला दालकी लिच पुत्री आदरणीय क़ासिम दालकी लिच साहिब (विटलिश, जर्मनी) का निकाह प्रिय अन्सर असलम (वाकिफ नौ) पुत्र आदरणीय नवीद अज़ीज़ असलम साहिब (वेस बादिन, जर्मनी) के साथ तय पाया।

प्रिया अर्सा नसीर पुत्री आदरणीय नसीर अहमद ज़ाहिद साहिब (Crescent UK) का निकाह प्रिय अदील बासिम (मुरब्बी सिलसिला हॉलैंड) पुत्र आदरणीय शकील असलम साहिब के साथ तय पाया।

प्रिया सना ख़लील अहमद (वाकिफ़ा नौ) पुत्री आदरणीय ख़लीलुद्दीन अहमद साहिब (फ्लोर्स हाइम ,जर्मनी) का निकाह प्रिय ताहिर अहमद (वाकिफ नौ) पुत्र आदरणीय बिशारत अहमद साहिब (पाडर बोर्न जर्मनी)के साथ तय पाया

निकाहों के ऐलान के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने दुआ करवाई। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला अपनी रिहायश गाह तशरीफ़ ले गए।

(शेष.....)

☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad